वर्ष –02, अंक – 01, त्रैमासिक पत्रिका (जनवरी–मार्च, 2024)

राज भवन संवाद

★ थाईलैंड में रची–बसी हैं भारतीय सभ्यता व संस्कृति
★ भारतरत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर
★ मंदार की मथनी से हुआ था समुद्र मंथन
★ मलाई की मिठाई खुरचन : मखमली स्वाद
★ सदा आनंद रहे एही द्वारे

जनकवि बाबा नागार्जुन

जन्म– 30 जून,1911

मृत्यु– 15 नवंबर,1998

'जनता मुझसे पूछ रही है क्या बतलाऊं
जन कवि हूं मैं साफ कहूंगा क्यों हकलाऊं.....'

ये पंक्तियां सही मायनों में जन कवि बाबा नागार्जुन की पहचान हैं। साफगोई और जन सरोकार के मुद्दों की मुखरता से तरफदारी उनकी विशेषता रही। अपने समय की हर महत्वपूर्ण घटनाओं पर प्रहार करती कवितायें लिखने वाले बाबा नागार्जुन एक ऐसी हरफनमौला शख्सियत थे जिन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं और भाषाओं में लेखन के साथ–साथ जनान्दोलनों में भी बढ़–चढ़कर भाग लिया और कुशासन के खिलाफ तनकर खड़े रहे।

गरीबी, भूख, अत्याचार व कुशासन के खिलाफ जमकर बरसने वाले बाबा नागार्जुन का जन्म 30 जून, 1911 को बिहार के मधुबनी जिले के सतलखा गांव में हुआ था। उनका असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था लेकिन हिंदी साहित्य में 'नागार्जुन' और मैथिली में 'यात्री' नाम से उन्होंने कविताएं लिखीं। उनके पिता कृषक थे और आजीविका चलाने के लिए आस–पास के गावों में पुरोहिती भी कर लिया करते थे। जनकवि सन् 1935 में श्रीलंका गये जहां उन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण की और बैद्यनाथ नाम त्यागकर 'नागार्जुन' नाम ग्रहण किया। 05 नवम्बर, 1998 को उनका निधन हुआ।

अकाल और उसके बाद

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास।
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त,
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।
दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद,
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद।
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद,
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।

एक के नहीं

एक के नहीं,
दो के नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू,
एक के नहीं,
दो के नहीं,
लाख–लाख कोटि–कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा,
एक की नहीं,
दो की नहीं,
हजार–हजार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म,
फसल क्या है?
और तो कुछ नहीं है वह,
नदियों के पानी का जादू जय वह,
हाथों के स्पर्श की महिमा है,
भूरी–काली–संदली मिट्टी का गुण धर्म है,
रूपांतर है सूरज की किरणों का,
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का।

वर्ष –02, अंक – 01, त्रैमासिक पत्रिका

राज भवन संवाद

प्रधान संपादक
रॉबर्ट एल.चोंग्थू

कार्यकारी संपादक
राकेश पाण्डेय

संपादक मंडल
प्रीतेश देसाई
संजय कुमार
धीरज नारायण सुधाँशु

सम्पादकीय पता : जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना, बिहार – 800022
ई मेल : pr.rajbhavan@gmail.com
दूरभाष : 0612–2786119
E-Patrika - www.governor.bih.nic.in

प्रकाशक/मुद्रक : स्वत्व मीडिया नेटवर्क प्रा.लि., नियर कुल्हड़िया कॉम्प्लेक्स, पटना, बिहार से प्रकाशित एवं मारुति ऑफसेट, डी.एन. दास रोड, बंगाली अखाड़ा, पटना से मुद्रित।
ई मेल : swatvapatrika@gmail.com
दूरभाष : 9608190823

थाईलैंड में भारतीय धर्म, संस्कृति और परम्पराओं का प्रभाव

माननीय राज्यपाल, बिहार ने फरवरी, 2024 के तीसरे सप्ताह में एक प्रतिनिधिमंडल के साथ थाईलैंड की यात्रा की। 'राजभवन संवाद' के प्रस्तुत अंक में उन्होंने पांच दिवसीय थाईलैंड प्रवास के अनुभवों का अपने स्थायी कॉलम 'शब्द संवाद' में सुरूचिपूर्ण आलेखन किया है। इसके साथ ही इस अंक में अन्य स्थायी कॉलम भी इस त्रैमासिक पत्रिका की पठनीयता की श्रीवृद्धि में सहायक हैं।

थाईलैंड और भारत का धार्मिक, सांस्कृतिक व वाणिज्यिक संबंध सदियों पुराना है। संस्कृत और पाली ग्रंथों में थाईलैंड को कथकोश, सुवर्ण भूमि, स्वर्ण द्वीप जैसे अलग–अलग नामों से संबोधित किया गया है। सदियों से दक्षिण–पूर्व एशियाई देश थाईलैंड और भारत की सभ्यता, संस्कृति और परम्पराओं में घनिष्ठ संबंध रहा है। थाईलैंड में भारतीय संस्कृति का प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टिगोचर होता है। यह प्रभाव शासन व्यवस्था, समाज, भाषा और साहित्य, धर्म, संस्कृति और स्थापत्य कला आदि क्षेत्रों में आज भी देखा जा सकता है। राम और उनकी कथाएं भी थाईलैंड को भारत से जोड़ती हैं।

निश्चित तौर पर भगवान बुद्ध एक ऐसे सेतु हैं जिन्होंने थाईलैंड सहित कई देशों को भारत से जोड़ दिया है। थाईलैंड के मूल में भारतीय दर्शन, अध्यात्म और संस्कृति की गहरी पैठ है। अनेक ऐसी सामाजिक–सांस्कृतिक परम्पराएं आज भी वहां के आचार–व्यवहार में प्रचलित हैं जिनकी भारतीय व्यवहार से काफी समानताएं हैं। देवस्थान या 'थाई रॉयल कोर्ट' का 'रॉयल ब्राहम्ण ऑफिस' बैंकॉक के फ्रा नाखोन जिले में वाट सुथत के पास स्थित मंदिर थाईलैंड में हिन्दू धर्म का आधिकारिक केन्द्र है। एक तरह से यह हमारी साझी धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओं को रेखांकित करता है। माननीय राज्यपाल का आलेखन ऐसी अनेक जानकारियों से परिपूर्ण है।

माननीय राज्यपाल की गतिविधियों, सम्बोधनों व 'एक भारत–श्रेष्ठ भारत' के तहत राज्यों के स्थापना दिवस के आयोजनों की जानकारी के साथ इस बार 'काव्य–स्वर' के अन्तर्गत जनकवि बाबा नागार्जुन का संक्षिप्त परिचय और उनकी दो रचनाएं प्रस्तुत की गई है। 'बिहार विभूति' में सद्यः 'भारत रत्न' से सम्मानित जननायक कर्पूरी ठाकुर पर सारगर्भित आलेख के साथ 'धरोहर' कॉलम में 'मंदार की मथनी से हुआ था समुद्र मंथन', 'बिहारी स्वाद' के तहत 'मलाई की मिठाई खुरचन : मखमली स्वाद' तथा 'लोक–संस्कृति' के अन्तर्गत बिहारी फाग–'सदा आनंद रहे एही द्वारे' इस अंक के मुख्य आकर्षण हैं।

उम्मीद है, पूर्व की भांति यह अंक भी आप पाठकों को पसंद आएगा।

शुभकामनाओं के साथ–

(रॉबर्ट एल० चोंग्थू)
राज्यपाल के प्रधान सचिव

इस अंक में...

थाईलैंड में रची–बसी हैं भारतीय सभ्यता व संस्कृति	04
आध्यात्मिकता भारत का प्राण है–राज्यपाल	06
चिकित्सक मरीजों के विश्वास को बनाये रखें–राज्यपाल	07
एन.सी.सी. का कार्य अत्यन्त सराहनीय एवं प्रेरणादायी–राज्यपाल	08
खेलकूद पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग–राज्यपाल	11
देश के सभी राज्यों की अपनी–अपनी विशेषताएँ–राज्यपाल	17
बिहारी दूसरों की मदद के लिए हमेशा रहते हैं तैयार–राज्यपाल	18
शपथ ग्रहण	19
भारतरत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर	22
शिष्टाचार मुलाकात	24
जयंती–पुण्यतिथि	25
मंदार की मथनी से हुआ था समुद्र मंथन	26
मलाई की मिठाई खुरचन : मखमली स्वाद	28
सदा आनंद रहे एही द्वारे	29

थाईलैंड प्रवास

थाईलैंड में स्ची–बसी हैं भारतीय सभ्यता व संस्कृति

राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर
राज्यपाल, बिहार

भारतीय संस्कृति की समृद्धि और इसके वैश्विक विस्तार में बिहार का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह राज्य बौद्ध एवं जैन, दो धर्मों का उद्गम स्थल रहा है। भगवान बुद्ध को बिहार के बोधगया में ज्ञान की प्राप्ति हुई और उनके द्वारा प्रणीत बौद्ध धर्म ने न केवल भारत, बल्कि पूरे विश्व पर अपना प्रभाव डाला। इस धर्म के कारण हुए परिवर्तनों के फलस्वरूप भारत और अन्य देशों के एक–दूसरे के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित हुए। दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों पर भारत के धार्मिक और आध्यात्मिक प्रभाव को मैंने अपने पांच दिवसीय थाईलैंड प्रवास के दौरान विशेष रूप से अनुभव किया।

बिहार के राज्यपाल के रूप में मुझे 22 फरवरी, 2024 को भगवान बुद्ध और उनके दो प्रमुख शिष्यों– अरिहंत सारिपुत्त एवं अरिहंत मौदग्लयायन के पवित्र अस्थि अवशेषों को लेकर बैंकाक जाने का अवसर मिला। केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ० वीरेन्द्र कुमार के अतिरिक्त मेरे साथ 22 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भी था। इन दिव्य और पावन प्रतीकों के बैंकाक राष्ट्रीय संग्रहालय पहुँचने पर श्रद्धालुओं ने गहरी आस्था और बड़े ही उत्साह के साथ स्वागत किया। थाईलैंड के प्रधानमंत्री श्रेठा थाविसिन ने 23 फरवरी, 2024 को रॉयल पैलेस ग्राउण्ड, सनम लुआंग में इन पावन अस्थि–अवशेषों की पूजा अर्चना की और तदुपरान्त मक्खा बुचा दिवस पर आम लोगों ने इनके दर्शन किए।

अपनी यात्रा के दूसरे दिन 23 फरवरी, 2024 को वाट पो (थाईलैंड) में मैंने भगवान बुद्ध को प्रार्थनाएँ अर्पित की। इस अवसर पर पुणे विश्वविद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र डॉ० देववज्राचार्य को दुर्लभ बौद्ध ग्रंथों और साहित्य के 108 खंड भेंट किए। यह उपहार न केवल हमारी साझा बौद्धिक धरोहर को मजबूती प्रदान करेगा, बल्कि हमारे बीच ज्ञान और दर्शन के विनिमय को भी बढ़ावा देगा। 23 फरवरी को ही मैंने थाईलैंड में 'बुद्धभूमि भारत' की थीम पर आधारित चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इसके माध्यम से लोगों को भारत में विद्यमान प्रमुख बौद्ध स्थलों और अवशेषों के बारे में विशेष जानकारी मिल सकेगी।

तीसरे दिन मैंने अयुत्थया शहर (Ayutthaya) का भ्रमण किया। इस शहर की प्राचीन मंदिरें, महलें एवं खण्डहर थाईलैंड की समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत की साक्षी हैं। इन धरोहरों से आधुनिक थाईलैंड की सांस्कृतिक जड़ों की गहराई का पता चलता है।

मध्य थाईलैंड में अवस्थित अयुत्थया शहर भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या के नाम पर नामित है। 13वीं शताब्दी के बाद से, कई थाई राजाओं ने राम की उपाधि धारण की, जो वर्तमान राजवंश के दौरान वंशानुगत हो गया है। भारत और थाईलैंड के संबंध एक बार फिर से गहरे हो रहे हैं। सांस्कृतिक रूप से एकजुट यह देश कई मायनों में एक–दूसरे के बेहद निकट हैं।

थाईलैंड पर रामायण का भी गहरा असर है। रामायण को थाईलैंड में रामकृति (राम की महिमा) या रामकियन (राम का वृत्तांत) के तौर पर जाना जाता है। थाईलैंड में राम लीला होती है। बौद्ध मंदिरों पर भी रामायण की सांस्कृतिक प्रतिकृतियां नजर आती हैं। थाईलैंड के कई शहरों में राम के जीवन से जुड़ी किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। कठपुतली शो और थिएटर कार्यक्रमों में रामायण और महाभारत के एपिसोड नियमित रूप से दिखाए जाते हैं।

25 फरवरी, 2024 को मैंने बैंकॉक के प्रतिष्ठित मंदिर 'वाट अरुण' में प्रार्थना की तथा मोनास्ट्री के उप प्रमुख श्रद्धेय सोवाई के साथ भारत के बौद्ध तीर्थस्थलों एवं हिमालीय क्षेत्र के बौद्ध मठों तथा भारत व थाईलैंड के बुद्धिस्ट संबंधों (Buddhist linkages) को मजबूत करने के बारे में चर्चा की। मैंने ग्रैंड पैलेस और एमराल्ड बुद्ध मंदिर, बैंकॉक का भी परिभ्रमण किया। खूबसूरत रामायण पेंटिंग्स से सुसज्जित यह ऐतिहासिक स्थल भारत और थाईलैंड के सांस्कृतिक संबंधों को परिलक्षित करता है। यहाँ की भव्यता और सुंदरता अत्यंत मनोरम और मन को मुग्ध

करनेवाली है।

थाईलैंड यात्रा के अंतिम दिन 26 फरवरी को महाचुलालोंगकॉर्न विश्वविद्यालय के वाइस रेक्टर एवं वाट रेटचासिथाराम के प्रमुख श्रद्धेय प्रो० (डा०) सुरासक पचन्तासेना से दोनों देशों के बीच शैक्षिक आदान–प्रदान के संबंध में बातचीत हुई।

भगवान बुद्ध एक ऐसे सेतु हैं जिन्होंने भारत को कई देशों से जोड़ दिया है, जिनमें थाईलैंड भी एक प्रमुख देश है। इन देशों के मूल में भारतीय दर्शन है, व्यवहार में बुद्ध हैं और संस्कृति भी काफी हद तक भारत जैसी है। वहां भी लोग, अभिवादन में भारत के लोगों की तरह झुकते हैं, नमन करते हैं और सामने वाले व्यक्ति को अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। थाईलैंड भी उन्हीं देशों में शुमार है। सेतु का काम कुछ हिंदू देवी–देवता भी करते हैं। जैसे हमारे यहाँ हाथी को भगवान गणेश से जोड़कर देखते हैं, थाईलैंड की भी कुछ ऐसी ही परंपरा है।

थाईलैंड में भारतीय सभ्यता व संस्कृति रची–बसी है। भौगोलिक तौर पर दक्षिण–पूर्व का यह पूरा क्षेत्र, वियतनाम, कंबोडिया, लाओस, थाईलैंड, म्यांमार और मलय राज्यों से बना है। संस्कृत, बौद्ध और जैन ग्रंथों के अनुसार यह क्षेत्र कभी भी भारतीय भूमि से अनजान नहीं रहा। दोनों देशों के बीच के संबंध 2,000 साल से भी अधिक पुराने रहे हैं। समुद्री यात्राओं ने इनके बीच संबंधों को और मजबूत किया।

थाईलैंड का देवस्थान या 'थाई रॉयल कोर्ट' का 'रॉयल ब्राह्मण ऑफिस' बैंकॉक के फ्रा नाखोन जिले में वाट सुथत के पास स्थित है। यह मंदिर थाईलैंड में हिंदू धर्म का आधिकारिक केंद्र है। महाराजागुरु विधि थाई ब्राह्मण समुदाय के प्रमुख हैं। थाई, मलय और जावा समेत तमाम कई ऐसे इलाके हैं जहां की स्थानीय भाषाओं में संस्कृत, पाली और द्रविड़ मूल के शब्द ज्यादा हैं। थाई भाषा पर भी दक्षिण भारत के पल्लव वर्णमाला का असर है। इसी लिपि में यह भाषा लिखी गई है।

दक्षिण पूर्व एशिया पर भारत का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव धर्म के क्षेत्र में था। शिववाद, वैष्णववाद, थेरवाद बौद्ध धर्म, महायान बौद्ध धर्म और बाद में सिंहली बौद्ध धर्म इस क्षेत्र में प्रचलित हुए। राजनीतिक और प्रशासनिक संस्थाएँ और विचार, विशेष रूप से दैवीय प्राधिकार और राजत्व की अवधारणा, काफी हद तक भारतीय प्रथाओं से आकार लेती हैं। उदाहरण के लिए, थाई राजा को विष्णु का अवतार माना जाता है। इस प्रकार ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो थाईलैण्ड सहित दक्षिण पूर्व एशिया पर भारत के धार्मिक और आध्यात्मिक प्रभाव की पुष्टि करते हैं।

दक्षिण पूर्व एशिया पर भारत का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव धर्म के क्षेत्र में था। शिववाद, वैष्णववाद, थेरवाद बौद्ध धर्म, महायान बौद्ध धर्म और बाद में सिंहली बौद्ध धर्म इस क्षेत्र में प्रचलित हुआ। राजनीतिक और प्रशासनिक संस्थाएँ और विचार, विशेष रूप से दैवीय प्राधिकार और राजत्व की अवधारणा, काफी हद तक भारतीय प्रथाओं से आकार लेती हैं। उदाहरण के लिए थाई राजा को विष्णु का अवतार माना जाता है। इस प्रकार ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो थाईलैण्ड सहित दक्षिण पूर्व एशिया पर भारत के धार्मिक और आध्यात्मिक प्रभाव की पुष्टि करते हैं।

■

आध्यात्मिकता भारत का प्राण है –राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने संस्कार भारती, बिहार प्रदेश एवं सीमेज शैक्षणिक समूह द्वारा श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल, पटना में 12 जनवरी, 2024 को आयोजित ''इन्सपायरो–2024'' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि आध्यात्मिकता भारत का प्राण है और इसी के कारण विश्व में हमारा गौरव बढ़ा है।

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए माननीय राज्यपाल (12 जनवरी, 2024)

उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने भारत की संस्कृति, परंपरा और विरासत से दुनिया को अवगत कराया। स्वामी जी सहित भारत के अन्य महापुरुषों ने दूसरे देशों के लोगों को अध्यात्म की बातें बतायी ताकि विश्व का कल्याण हो सके। राज्यपाल ने कहा कि अपने मत और धर्म को किसी पर जबरदस्ती थोपना और इन्हें स्वीकार करने के लिए विवश करना हमारी परंपरा नहीं रही है। स्वामी विवेकानंद से प्रभावित होकर एक विदेशी द्वारा हिन्दू धर्म स्वीकार करने की इच्छा व्यक्त करने पर उन्होंने उसे ऐसा करने से मना कर दिया। उन्होंने उसे उसके अपने ही धर्म का अनुसरण करने को कहा।

राज्यपाल ने कार्यक्रम में उपस्थित छात्र–छात्राओं से कहा कि वे वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में सहभागी बनें। भारत की बड़ी आबादी बोझ नहीं, बल्कि हमारी पूंजी है। विश्व की सर्वाधिक युवा शक्ति भारत में है। युवाओं में ऊर्जा और उत्साह है तथा उनके कारण ही भारत विकसित बनेगा। उन्होंने कहा कि विकसित भारत का अभिप्राय देश के सर्वांगीण विकास से है।

उन्होंने कहा कि व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी (Professional Students) खुद के पैरों पर खड़ा होकर रोजगार प्रदाता बनें, न कि नौकरी की तलाश करने वाला। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 इसमें उपयोगी और हमारी जरूरतों के अनुरूप है। इसे अपनाने की आवश्यकता है।

राज्यपाल ने छात्र–छात्राओं से कहा कि वे स्वामी विवेकानंद के जीवन से प्रेरणा लेकर राह में आनेवाली कठिनाइयों का सामना करते हुए आगे बढ़ें। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के जीवन पर आधारित पद्मश्री शेखर सेन द्वारा प्रस्तुत सांगीतिक नाटक का अवलोकन भी किया।

कार्यक्रम को पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति प्रो० आर०के० सिंह ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर सीमेज शैक्षणिक समूह के चेयरमैन श्री बसंत अग्रवाल, निदेशक प्रो० नीरज अग्रवाल एवं श्रीमती मेघा अग्रवाल, छात्र–छात्राएँ तथा अन्य लोग उपस्थित थे। ■

युवाओं के परिश्रम, ऊर्जा और प्रतिभा से भारत बनेगा विकसित –राज्यपाल

कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (31 जनवरी, 2024)

''युवाओं के परिश्रम, ऊर्जा और प्रतिभा से ही वर्ष 2047 तक भारत विकसित बनेगा। आनेवाला कल हमारे युवाओं पर ही निर्भर है। वे देश का वर्तमान भी बना रहे हैं और भविष्य भी बनायेंगे।''– यह बातें माननीय राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 31 जनवरी, 2024 को रवीन्द्र भवन, पटना में नेहरू युवा केन्द्र संगठन, बिहार, पटना द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय युवा उत्सव के उद्घाटन के अवसर पर कही।

उन्होंने कहा कि भारत को विकसित बनने के लिए आत्मनिर्भर बनना होगा। इसके लिए हमारी अर्थव्यवस्था एवं मुद्रा मजबूत होनी चाहिए। यह प्रसन्नता की बात है कि अनेक देशों के साथ हमारे देश का व्यापार यहाँ की मुद्रा 'रुपया' में हो रहा है और हमारी मुद्रा मजबूत हो रही है। आत्मनिर्भरता के लिए स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग अत्यन्त आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि भारत को विकसित एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 अत्यन्त उपयोगी है। इसे अपना कर हम गुलामी की मानसिकता से बाहर निकल सकेंगे। यह नीति युवाओं को रोजगार प्रदाता बनाने में भी सहायक है।

राज्यपाल ने कहा कि विगत कुछ वर्षों से नेहरू युवा केन्द्र की गतिविधियाँ बढ़ी हैं। उन्होंने राज्य स्तरीय युवा उत्सव के प्रतिभागियों से कहा कि वे इस कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लें। ■

चिकित्सक मरीजों के विश्वास को बनाये रखें–राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 03 फरवरी, 2024 को आई०जी०आई०एम०एस०, पटना में इस संस्थान के पैथोलॉजी विभाग एवं बिहार एसोसिएशन ऑफ पैथोलॉजी एण्ड माइक्रोबायोलॉजी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित BAPCON-2024 का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि चिकित्सक लोगों के स्वास्थ्य के रक्षक हैं और समाज उनपर भरोसा करता है, अतः वे इस विश्वास को बनाये रखें। पैथोलॉजिस्ट का काम काफी जिम्मेदारी भरा होता है। चिकित्सक द्वारा रोगों की पहचान पैथोलॉजिकल रिपोर्ट पर निर्भर करता है। अतः इसमें काफी सावधान रहने की जरूरत है। मरीजों को विश्वास होना चाहिए कि उनका पैथोलॉजिकल रिपोर्ट अंतिम रूप से सही है।

उन्होंने कहा कि पैथोलॉजी एण्ड माइक्रोबायोलॉजी के क्षेत्र में नये–नये अनुसंधान हो रहे हैं, किन्तु पुरानी पद्धतियाँ भी उपयोगी हैं। अतः बेहतर परिणाम के लिए विभिन्न पद्धतियों का समेकित रूप से उपयोग किया जाना चाहिए।

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते माननीय राज्यपाल (03 फरवरी, 2024)

राज्यपाल ने इस अवसर पर BAPCON-2024 से संबंधित स्मारिका का भी विमोचन किया। कार्यक्रम में आई०जी०आई०एम०एस०, पटना के निदेशक डॉ० बिन्दे कुमार एवं विभिन्न पदाधिकारीगण व चिकित्सकगण, बिहार एवं देश के विभिन्न हिस्सों से आये चिकित्सकगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

आज बेटियाँ सभी क्षेत्रों में कर रही हैं नेतृत्व–राज्यपाल

कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (03 फरवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 03 फरवरी, 2024 को आयोजित पटना वीमेंस कॉलेज के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आज बेटियाँ उन सभी क्षेत्रों में नेतृत्व कर रही हैं जहाँ वे पहले जाने के लिए सोचती भी नहीं थीं। ऐसा वातावरण अनेक लोगों के प्रयास से बना है। उन्होंने कहा कि समान नागरिक संहिता (Uniform Civil Code) से सबसे अधिक लाभ हमारी बेटियों को होगा।

राज्यपाल ने कहा कि हमें बिहार के समृद्ध इतिहास और परंपराओं से प्रेरणा लेकर आज के वर्तमान को संवारना चाहिए। उन्होंने महाविद्यालय की छात्राओं से कहा कि युवाओं को भारत को वर्ष 2047 तक विकसित देश बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहभागी बनना चाहिए। इसके लिए उनका पूरा जीवन देश और समाज के लिए समर्पित होना चाहिए। हमारी बेटियों को नौकरी की तलाश करने के बजाए रोजगार प्रदाता बनना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 इसमें उपयोगी है। यह नीति हमें नया विचार देती है और देश के लिए काम करने को प्रेरित करती है। उन्होंने कहा कि युवाओं के विचारों, निष्ठा, आचरण एवं समर्पण से ही भारत एक विकसित राष्ट्र बनेगा।

राज्यपाल ने पटना वीमेंस कॉलेज की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसने अपने 83 वर्षों की यात्रा में अनेक उपलब्धियाँ हासिल की हैं और देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के क्रियान्वयन में भी तत्परता दिखाई है। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। राज्यपाल ने उल्लेखनीय प्रदर्शन हेतु अनेक छात्राओं को पुरस्कृत किया।

एन०सी०सी० का कार्य अत्यन्त सराहनीय एवं प्रेरणादायी-राज्यपाल

स्मृति चिन्ह भेंट करते माननीय राज्यपाल (05 फरवरी, 2024)

''एन०सी०सी० कैडेट्स देश और समाज के लिए काम करते हैं तथा आपदा की स्थिति में लोगों को मदद पहुँचाते हैं। उनका कार्य अत्यन्त सराहनीय एवं प्रेरणादायी है।'' –यह बातें माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने एन०सी०सी० कैडेट्स के सम्मान में 05 फरवरी, 2024 को राजभवन के राजेन्द्र मंडप में आयोजित 'एट होम' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। बिहार–झारखंड के ये एन०सी०सी० कैडेट्स नई दिल्ली में आयोजित 75वें गणतंत्र दिवस समारोह के राष्ट्रीय परेड में भाग लेकर लौटे थे।

राज्यपाल ने कहा कि नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस समारोह के राष्ट्रीय परेड में भाग लेना गौरव का विषय है और हमारे एन०सी०सी० कैडेट्स ने इस परेड का हिस्सा बनकर बिहार का मान बढ़ाया है।

राज्यपाल ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि एन०सी०सी० कैडेट्स टी०बी० मुक्त भारत अभियान से जुड़कर देश एवं राज्य को टी०बी० से मुक्त करने में अपना योगदान दे रहे हैं। उन्होंने उनसे रेडक्रॉस सोसाइटी से जुड़कर काम करने को कहा। उन्होंने कहा कि इसके लिए रेडक्रॉस सोसाइटी द्वारा उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

राज्यपाल ने एन०सी०सी० कैडेट्स से वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में सहभागी बनने को कहा। उन्होंने कहा कि हमारी एकता भारत को श्रेष्ठ बनाती है तथा हम एक होकर ही भारत को विकसित बना सकेंगे। हम सभी भारत माता की संतान हैं, इसलिए हम एक हैं।

समारोह में बिहार एवं झारखंड की लोक संस्कृति पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये। इस अवसर पर राज्यपाल ने इंटर ग्रुप चैम्पियनशिप ट्रॉफी एवं गवर्नर्स बैनर प्रदान किया तथा सांस्कृतिक दल को पुरस्कृत किया। उन्होंने भारत की सैन्य शक्ति के विकास से संबंधित प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। ■

निजी विश्वविद्यालय बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करें -राज्यपाल

बिहार के निजी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ बैठक की अध्यक्षता करते माननीय राज्यपाल (06 फरवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 06 फरवरी, 2024 को बिहार के निजी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ राजभवन में बैठक कर वहाँ की गतिविधियों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की संख्या, पढ़ाये जाने वाले विषय एवं आधारभूत संरचना आदि की जानकारी ली तथा उनसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने को कहा।

राज्यपाल ने कहा कि बिहार में शिक्षा के क्षेत्र में निजी विश्वविद्यालयों का भी योगदान है और यहाँ की शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार हेतु सबको मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों में भारतीय ज्ञान परंपरा को स्थापित करने की जरूरत है और इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के प्रावधानों को लागू किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सभी बच्चों का अधिकार है। निजी विश्वविद्यालयों को प्रयास करना चाहिए कि गाँवों के गरीब बच्चों को भी ऐसी शिक्षा मिले और इसके लिए सभी संभव प्रयास किये जाने चाहिए। वे गाँवों में जाकर भी बच्चों को मदद कर सकते हैं। विश्वविद्यालय ग्रामीण लोगों की मदद के लिए इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी से भी मदद ले सकते हैं।

राज्यपाल ने कहा कि निजी विश्वविद्यालय अपनी विभिन्न गतिविधियों के लिए नवीनतम तकनीकों का उपयोग करें। वे बच्चों को एन०सी०सी० तथा एन०एस०एस० से भी जोड़ें। बैठक में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, बिहार के निजी विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

कृषि हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़–राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 21 फरवरी, 2024 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना के 24वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय कृषि मेला–सह–जनजातीय कृषक सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए किसानों का समृद्ध होना आवश्यक है। प्राकृतिक खेती को अपनाने से उनकी आय दुगुनी हो सकती है।

उन्होंने कहा कि किसानों के परिश्रम से ही हमें खाने को अन्न मिलता है। वे प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर खेती करना जानते हैं और खेत ही उनका प्रयोगशाला होता है। हमारे पूर्वजों द्वारा खेतों में रासायनिक खादों का प्रयोग नहीं करने के बावजूद अच्छी उपज होती थी, परन्तु बाद में इनके प्रयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति का ह्रास होने लगा। रासायनिक खाद खरीदने के लिए किसान कर्ज के जाल में फँसते चले गए। हमें इस दुष्चक्र से बाहर निकलने की जरूरत है।

कृषि मेला–सह–जनजातीय कृषक सम्मेलन में पुस्तक का अनावरण करते माननीय राज्यपाल (21 फरवरी, 2024)

राज्यपाल ने कहा कि प्राकृतिक खेती से जमीन की उर्वरा शक्ति एवं कृषि उत्पादकता दोनों में वृद्धि होती है। इस खेती के लिए देशी गाय का गोबर, गोमूत्र एवं स्थानीय रूप से उपलब्ध अन्य चीजों से निर्मित खाद का उपयोग किया जाता है। इस खेती में लगभग 27 प्रतिशत कम लागत आता है जबकि उत्पादकता में 52 प्रतिशत की वृद्धि होती है। उन्होंने कहा कि आई०सी०ए०आर०, कृषि विश्वविद्यालयों एवं अन्य संबंधित संस्थानों द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए तथा इसके लिए किसानों को आवश्यक सहयोग एवं मार्गदर्शन किया जाना चाहिए।

इस अवसर पर राज्यपाल ने कृषि पुस्तिका का विमोचन किया। उन्होंने स्थापना दिवस व्याख्यान के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के उप महानिदेशक डॉ० सुरेश कुमार चौधरी एवं बेहतर कृषि कार्य के लिए किसानों को भी सम्मानित किया। उन्होंने पौधारोपण भी किया।

कार्यक्रम को डॉ० चौधरी के अतिरिक्त बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति डॉ० रामेश्वर सिंह ने भी संबोधित किया।

■

समाज की सेवा करना हम सबका दायित्व है –राज्यपाल

माननीय राज्यपाल दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए (03 मार्च, 2024)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 03 मार्च, 2024को नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन, बिहार प्रांत एवं सेवा भारती के संयुक्त तत्वावधान में आई०जी०आई०एम०एस०, पटना के ऑडिटोरियम में आयोजित '6ठें स्वामी विवेकानंद स्वास्थ्य सेवा यात्रा सम्मान समारोह' को संबोधित करते हुए कहा कि समाज की सेवा करना हम सबका दायित्व है, चाहे हम किसी भी क्षेत्र एवं पेशा से संबंध रखते हों।

उन्होंने कहा कि हम सब अपने दैनिक जीवन में नियमित रूप से अपने–अपने कार्य करते हैं, किन्तु कोई व्यक्ति जब इससे अलग हटकर विशिष्ट कार्य करता है तब समाज के अन्य लोगों को उससे प्रेरणा मिलती है।

राज्यपाल ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के अनुसार मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है। स्वामी जी की इस विचारधारा का आधार वसुधैव कुटुम्बकम है। पूरा विश्व ही हमारा परिवार है और इस परिवार की सेवा करना हमारा कर्तव्य है। नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन एवं सेवा भारती इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर कार्य कर रहे हैं। नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन का कार्य सेवा उन्मुख राष्ट्रवादी चिकित्सकों को तैयार कर समाज के लोगों को स्वास्थ्य सेवा प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि सुदूर गाँवों तक स्वास्थ्य सुविधाएँ पहुँचाना हमारा दायित्व है।

■

शिक्षा का उद्देश्य अच्छे व्यक्तियों का निर्माण करना है- राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 17 मार्च, 2024 को होटल लेमन ट्री, पटना में रेडियो सिटी द्वारा आयोजित "Educational Alchemists : Transforming Bihar's Districts" कॉफी टेबल बुक के अनावरण कार्यक्रम में भाग लिया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य अच्छे व्यक्तियों का निर्माण करना है क्योंकि उनके द्वारा ही राष्ट्र का निर्माण होता है। राष्ट्र का विकास शिक्षा के विकास पर निर्भर है। जब–जब हमारी शिक्षा में ह्रास हुआ, तब–तब हमारे राष्ट्र निर्माण के कार्य में भी कमी आई। प्राचीन भारत में बिहार शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। नालंदा विश्वविद्यालय में काफी संख्या में शिक्षिकाएँ थीं, परन्तु मध्यकाल में शिक्षा में गिरावट आई जिसे हमें बेहतर बनाना है।

कार्यक्रम को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (17 मार्च, 2024)

राज्यपाल ने कार्यक्रम में उपस्थित विभिन्न शिक्षण संस्थानों के निदेशकों से कहा कि वे विद्यार्थियों को नौकरी तलाश करने की मानसिकता से बाहर निकालकर उन्हें रोजगार प्रदाता बनने के लिए प्रेरित करें तथा स्टार्ट अप के लिए सक्षम बनायें। सरकार स्टार्ट अप को बढ़ावा देने के लिए प्रयत्नशील है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 जमीन से जुड़ी हुई शिक्षा नीति है और बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने में उपयोगी है। हमें बिहार में पुनः ऐसे शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करना चाहिए कि बच्चों को पढ़ाई के लिए यहां से बाहर नहीं जाना पड़े।

उन्होंने रेडियो सिटी के कार्यकलापों की सराहना करते हुए कहा कि यह मनोरंजन के साथ–साथ समाज का प्रबोधन भी कर रहा है।

इस अवसर पर राज्यपाल ने "Educational Alchemists : Transforming Bihar's Districts" कॉफी टेबल बुक का अनावरण किया। उन्होंने बच्चों को बेहतर शिक्षा देने के लिए राज्य के विभिन्न जिलों के विद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थानों के प्रमुखों को सम्मानित भी किया।

कार्यक्रम को बिहार राज्य विश्वविद्यालय सेवा आयोग के अध्यक्ष प्रो० गिरीश कुमार चौधरी ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर पटना व नालंदा खुला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० के०सी० सिन्हा, रेडियो सिटी के पदाधिकारीगण, बिहार के विभिन्न जिलों के विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों के निदेशकगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे।■

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का प्रांत अधिवेशन

2047 तक विकसित देश बनाने में सहभागी बनें युवा–राज्यपाल

अभाविप के प्रांत अधिवेशन को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (27 जनवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 27 जनवरी, 2024 को गेट पब्लिक लाईब्रेरी, गर्दनीबाग, पटना के परिसर में आयोजित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (उत्तर बिहार–दक्षिण बिहार) के 65वें संयुक्त प्रांत अधिवेशन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे युवा भारत को वर्ष 2047 तक विकसित देश बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहभागी बनें। इसके लिए उनका पूरा जीवन देश और समाज के लिए समर्पित होना चाहिए। उनके सामने 'स्व' का लक्ष्य होना चाहिए। स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग से ही भारत आत्मनिर्भर बन सकेगा। आनेवाले समय में भारत विश्व की तीन सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में से एक होगा।

उन्होंने कहा कि आनेवाला समय भारत का है, युवाओं का है। यदि हम दृढ़संकल्पित होकर आगे बढें तो अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर सकेंगे। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् एक विशाल राष्ट्रवादी संगठन है जो देश एवं समाज के लिए कुछ भी करने को तत्पर रहता है। इस अवसर पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

खेलकूद पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग – राज्यपाल

माननीय राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 10 जनवरी, 2024 को बिहार के सभी विश्वविद्यालयों के खेल निदेशकों (Director, Sports) की बैठक में विश्वविद्यालयों में खेल के मैदान अथवा स्टेडियम की उपलब्धता की जानकारी देने को कहा। उन्होंने शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों के स्वीकृत पद एवं इसके विरूद्ध कार्यरत बल तथा रिक्तियों की जानकारी भी उपलब्ध कराने को कहा।

राज्यपाल ने बैठक में आगामी अकादमिक कैलेण्डर वर्ष के लिए विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में खेल गतिविधियों के संबंध में विस्तृत कार्य योजना उपलब्ध कराने का निदेश दिया। उन्होंने विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा 'खेलो इंडिया' के अंतर्गत दिए गए प्रस्ताव संबंधी अद्यतन स्थिति के बारे में भी विस्तृत प्रतिवेदन उपलब्ध कराने को कहा।

विश्वविद्यालयों में खेल से संबंधित अधिकारियों की बैठक की अध्यक्षता करते माननीय राज्यपाल (10 जनवरी, 2024)

राज्यपाल ने खेलकूद को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बताते हुए कहा कि यह पाठ्यक्रम की अतिरिक्त गतिविधि (Extra Curricular Activity) नहीं, बल्कि सह पाठ्यक्रम गतिविधि (Co-Curricular Activity) है।

बैठक में सभी विश्वविद्यालयों की खेलकूद संबंधी विभिन्न समस्याओं पर विचार किया गया और समुचित दिशा–निर्देश दिये गये। खेल निदेशकों ने भी अपने सुझाव दिये।

राज्यपाल की अध्यक्षता में आहूत इस बैठक में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, विभिन्न विश्वविद्यालयों के खेल निदेशक, प्रभारी खेल पदाधिकारी, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

शिक्षकों की समयबद्ध प्रोन्नति सुनिश्चित करने का राज्यपाल का निदेश

पाटलिपुत्र वि.वि. पटना की सीनेट की बैठक को संबोधित करते हुए माननीय राज्यपाल (13 जनवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 13 जनवरी, 2024 को पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना की सीनेट की 7वीं बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों को सेवांत लाभ का भुगतान उनकी सेवानिवृत्ति के दिन ही होना चाहिए। उन्होंने सेवांत लाभ के लंबित मामलों को शीघ्र निष्पादित करने का निदेश दिया। उन्होंने शिक्षकों की समयबद्ध प्रोन्नति सुनिश्चित करने का निदेश देते हुए इसके लिए वार्षिक टाईम–टेबल बनाने को भी कहा।

राज्यपाल ने खेल विभाग के गठन के लिए राज्य सरकार को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालयों में पढ़ाई के साथ–साथ खेलकूद की गतिविधियाँ भी होनी चाहिए। उन्होंने खेलकूद संबंधी 'एकलव्य' कार्यक्रम को पुनः शुरू करने का निदेश दिया। उन्होंने केन्द्र सरकार के 'खेलो इंडिया' कार्यक्रम के तहत खेलकूद संबंधी दी जानेवाली सुविधाएँ व अनुदान प्राप्त करने हेतु आवश्यक कार्रवाई करने को भी कहा।

राज्यपाल ने सभी विश्वविद्यालयों को अपना एक 'एप (App) बनाने का निदेश देते हुए कहा कि इसे प्रतिदिन अद्यतन करना होगा। इसके माध्यम से विश्वविद्यालय की सभी गतिविधियों यथा–पढ़ाई, खेलकूद, बैठकें आदि के बारे में जानकारी मिल सकेगी। यह 'एप' राजभवन से जुड़ा हुआ होगा। इस 'एप' के माध्यम से विश्वविद्यालय की गतिविधियों पर नजर रखी जा सकेगी एवं इससे पारदर्शिता बढ़ेगी।

राज्यपाल की अध्यक्षता में आहूत इस बैठक में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० आर०के० सिंह, प्रतिकुलपति प्रो० गणेश महतो, कुलसचिव प्रो० शालिनी, सीनेट के सदस्यगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

पूर्णिया विश्वविद्यालय की सीनेट को राज्यपाल ने संबोधित किया

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 02 फरवरी, 2024 को पूर्णिया विश्वविद्यालय की चतुर्थ सीनेट की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि एक 'एप (App) तैयार किया जायेगा जिसके माध्यम से राजभवन को सभी विश्वविद्यालयों की गतिविधियों के बारे में जानकारी मिल सकेगी। इससे पारदर्शिता बढ़ेगी।

उन्होंने कहा कि बिहार में विश्वविद्यालयों को महाविद्यालयों की संख्या बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। इससे शिक्षा का स्तर ऊँचा होगा। उन्होंने कहा कि सीनेट के सदस्यों को विश्वविद्यालय प्रशासन के साथ लगातार संवाद बनाये रखना चाहिए। इससे आपसी विश्वास बढ़ेगा तथा विश्वविद्यालय बेहतर ढंग से कार्य करेगा। राज्यपाल ने विश्वविद्यालयों में शोध को बढ़ावा देने, सरकारी पैसे का सदुपयोग करने तथा शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों को ससमय प्रोन्नति देने को कहा। ■

पूर्णिया विश्वविद्यालय की सीनेट की बैठक में माननीय राज्यपाल (02 फरवरी, 2024)

अपने दायित्वों के प्रति गंभीर रहें विवि के अधिकारी–राज्यपाल

माननीय राज्यपाल – सह – कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 03 मार्च, 2024 को बिहार के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ राजभवन में बैठक कर स्नातक एवं स्नातकोत्तर सत्रों के एकेडमिक कैलेण्डर एवं लंबित परीक्षा तथा स्नातक सत्र 2024–28 में नामांकन आदि की समीक्षा की तथा महत्वपूर्ण निदेश दिये। उन्होंने कहा कि कुलपति के साथ–साथ विश्वविद्यालय के अन्य पदाधिकारियों यथा– प्रतिकुलपति, कुलसचिव, परीक्षा नियंत्रक आदि को भी अपने दायित्वों के प्रति गंभीर होना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि हमसब मिलकर बिहार में उच्च शिक्षा को बेहतर बनाने का प्रयत्न करेंगे। उन्होंने कहा कि कुलपति का समाज में काफी आदर और सम्मान है तथा वे अपने परिश्रम, निष्ठा और कर्त्तव्यों के प्रति समर्पण से इसे बनाये रखें।

राज्यपाल की अध्यक्षता में आहूत इस बैठक में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल०चोंग्थू, बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

राजभवन में कुलपतियों के साथ बैठक की अध्यक्षता करते माननीय राज्यपाल (03 मार्च, 2024)

राजभवन में आयोजित हुई खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी बोर्ड की बैठक

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर की अध्यक्षता में 09 मार्च, 2024को राजभवन के सभागार में खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी बोर्ड की आहूत बैठक में अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

बैठक में राज्यपाल ने इस लाइब्रेरी को लोकप्रिय बनाने हेतु जन सहभागिता बढ़ाने का निदेश देते हुए कहा कि इसके लिए पुस्तक प्रदर्शनी, टॉक शो, स्कूली बच्चों के लिए पेंटिंग प्रतियोगिता आदि का आयोजन कराया जाना चाहिए। केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय के अपर सचिव द्वारा इस कार्य में सहयोग करने का आश्वासन दिया गया।

बैठक में खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी पर आधारित लघु फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया। बैठक में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी बोर्ड के निदेशक व सदस्यगण, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे। केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय की अपर सचिव श्रीमती रंजना चोपड़ा ने विडीयो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए बैठक में भाग लिया। ■

राजभवन में खुदा बख्श ओरिएंटल लाइब्रेरी बोर्ड की बैठक की अध्यक्षता करते माननीय राज्यपाल (09 मार्च, 2024)

परीक्षाओं को ससमय सम्पन्न कराने में सहयोग करें सीनेट के सदस्य – राज्यपाल

कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा की 47वीं सीनेट की बैठक को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (12 मार्च, 2024)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 12 मार्च, 2024 को कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा की 47वीं सीनेट की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि इस वि०वि० के उत्थान एवं इसकी गतिविधियों के सम्यक संचालन का दायित्व यहाँ के पदाधिकारियों के अतिरिक्त सीनेट के सदस्यों का भी है। परीक्षाओं को ससमय सम्पन्न कराने में उन्हें विश्वविद्यालय प्रशासन के साथ सहयोग करना चाहिए।

उन्होंने इस विश्वविद्यालय को देश का एक अहम संस्कृत वि०वि० बनाने हेतु प्रयास करने पर बल देते हुए कहा कि यहाँ आंतरिक पत्राचार, संचिकाओं में टिप्पणी लेखन एवं आपसी वार्तालाप संस्कृत में होनी चाहिए। सीनेट के सदस्यों को भी संस्कृत का ज्ञान होना चाहिए। ■

सेवानिवृत्ति के दिन ही सेवान्त लाभ का हो भुगतान–राज्यपाल

माननीय राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 20 मार्च, 2024 को बिहार के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों एवं शिक्षा विभाग के पदाधिकारी के साथ राजभवन में बैठक की तथा शिक्षकों की रिक्तियों को भरने एवं शिक्षकों व शिक्षकेत्तर कर्मचारियों को उनकी सेवानिवृत्ति के दिन ही सेवान्त लाभ का भुगतान करने का निदेश दिया। उन्होंने बैंक खातों का संचालन, अंकेक्षण आपत्ति का निराकरण तथा यू०आई०एम०एस० की भी समीक्षा की एवं महत्वपूर्ण निदेश दिये।

बैठक में कुलपतियों द्वारा विश्वविद्यालय सूचना प्रबंधन प्रणाली (University Information Management System-UIMS) से जुड़ी समस्याओं से अवगत कराने पर राज्यपाल ने इनके शीघ्र समाधान का भरोसा दिलाया। उन्होंने कहा कि इसका अनुश्रवण राजभवन के स्तर पर किया जायेगा। उन्होंने सभी कुलपतियों को निदेश दिया कि शिक्षकों व शिक्षकेत्तर कर्मचारियों को उनकी सेवानिवृत्ति के दिन ही सेवान्त लाभ का भुगतान कर दिया जाये। उन्होंने कहा कि छात्र–छात्राओं का नामांकन उनके निकट के ही महाविद्यालयों में होना चाहिए ताकि उन्हें सहूलियत हो।

कुलपतियों के साथ बैठक की अध्यक्षता करते माननीय राज्यपाल (20 मार्च, 2024)

राज्यपाल की अध्यक्षता में आहूत इस बैठक में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, शिक्षा विभाग के सचिव श्री वैद्यनाथ यादव, बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

शोध के अनुकुल विश्वविद्यालयों में बने माहौल–राज्यपाल

माननीय राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने मगध विश्वविद्यालय, बोधगया की अधिषद की वार्षिक बैठक में भाग लिया।

उन्होंने अधिषद के सदस्यों की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि उनपर विद्यार्थियों के भविष्य को सँवारने का दायित्व है। अधिषद की बैठक में केवल बजट ही पारित नही किये जाने चाहिए बल्कि विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था पर भी विचार किया जाना चाहिए। हमें अपने कार्यों का सिंहावलोकन एवं शिक्षा व्यवस्था में नई पहल करने की जरूरत है ताकि हम आने वाली पीढ़ी को सकारात्मक जवाब दे सकें। उन्होंने कहा कि बिहार में शैक्षणिक व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि यहाँ के बच्चों को पढ़ाई के लिए बाहर नहीं जाना पड़े। राज्यपाल ने कहा कि शोध करना विश्वविद्यालयों का एक महत्वपूर्ण कार्य है और इसके लिए अनुकूल माहौल बनाया जाना चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालयों में गठित पेंशन कोषांग की चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षकों एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों को उनके सेवानिवृत्ति के दिन ही सभी सेवान्त लाभ मिल जाने चाहिए। ■

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते माननीय राज्यपाल (04 जनवरी, 2024)

विश्वविद्यालय पुनः शुरु करें 'एकलव्य' कार्यक्रम

माननीय राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना की सीनेट की 7वीं बैठक में शिक्षकों को समयबद्ध प्रोन्नति देने तथा शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के सेवांत लाभ का भुगतान उनकी सेवानिवृत्ति के दिन ही करने का निदेश दिया।

उन्होंने विश्वविद्यालयों में 'एकलव्य' कार्यक्रम को पुनः शुरू कराने तथा केन्द्र सरकार के 'खेलो इंडिया' कार्यक्रम के तहत खेलकूद संबंधी दी जानेवाली सुविधाएँ व अनुदान प्राप्त करने हेतु आवश्यक कार्रवाई करने को भी कहा।

राज्यपाल ने सभी विश्वविद्यालयों को अपना एक 'एप' बनाने का निदेश दिया। इसके माध्यम से विश्वविद्यालय की सभी गतिविधियों के बारे में जानकारी मिल सकेगी। ■

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते माननीय राज्यपाल (13 जनवरी, 2024)

युवाओं को दें रोजगार प्रदाता बनने का मार्गदर्शन–राज्यपाल

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते माननीय राज्यपाल (13 मार्च, 2024)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की सीनेट की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य अच्छे व्यक्ति का निर्माण करना है। विश्वविद्यालय का कार्य युवा शक्ति को सही दिशा दिखाना है ताकि वे समाजोपयोगी कार्य कर सकें। उन्हें आत्मनिर्भर बनने तथा नौकरी तलाश करने के बजाए रोजगार प्रदाता बनने हेतु सही मार्गदर्शन मिलना आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 इसमें उपयोगी है।

राज्यपाल ने कहा कि हमें बिहार के शैक्षणिक माहौल को बेहतर बनाना है ताकि यहाँ के बच्चों को पढ़ाई के लिए बाहर नही जाना पड़े। ■

माहौल ऐसा बने कि बाहर के विद्यार्थी बिहार आएं–राज्यपाल

माननीय राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने बी०आर०ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर की सीनेट की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि परीक्षा का संचालन, उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन, परीक्षाफल का प्रकाशन एवं डिग्री वितरण ससमय सुनिश्चित करायें। सभी विश्वविद्यालय इनसे संबंधित कार्यों के लिए अपना सॉफ्टवेयर विकसित करें।

उन्होंने कहा कि बिहार का वैशाली विश्व में लोकतंत्र की जननी है। यहाँ के नालंदा विश्वविद्यालय में विश्व भर के विद्यार्थी पढ़ने के लिए आते थे। हमें बिहार में पुनः ऐसे शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करना चाहिए ताकि यहाँ बच्चों को पढ़ाई के लिए बाहर नहीं जाना पड़े, बल्कि बाहर के विद्यार्थी विद्यार्जन के लिए बिहार में आ सकें।

बी.बार.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर की सीनेट की बैठक में माननीय राज्यपाल (14 मार्च, 2024)

राज्यपाल ने विश्वविद्यालयों में शोध कार्य को बढ़ावा देने पर जोर देते हुए कहा कि छात्र–छात्राओं को इसके लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालय के शिक्षकों का शोध पत्र भी नियमित रूप से प्रकाशित होना चाहिए। ■

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य जे.पी. के विचारों में निहित-राज्यपाल

माननीय राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा की सीनेट की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 का मूल उद्देश्य जय प्रकाश नारायण के विचारों में निहित है। उन्होंने कहा कि परीक्षा का संचालन, उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन, परीक्षाफल का प्रकाशन एवं डिग्री वितरण आदि कार्यों के लिए सभी विश्वविद्यालय अपनी आवश्यकता के अनुरूप अपना सॉफ्टवेयर विकसित करें और उसे स्वयं संचालित करें। इससे सत्र को नियमित करने में काफी सहायता मिलेगी।

उन्होंने कहा कि हमें बिहार में ऐसे शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करना चाहिए कि यहाँ से बच्चों को पढ़ाई के लिए बाहर नहीं जाना पड़े, बल्कि बाहर के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिए बिहार में आ सकें। राज्यपाल ने सीनेट के सदस्यों से कहा कि वे विश्वविद्यालय की गतिविधियों के बारे में जानकारी रखें और वहाँ के विकास कार्यों में सहयोग करें। ■

जे.पी. वि.वि., छपरा की सीनेट की बैठक को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (18 मार्च, 2024)

लंबित परीक्षाएं शीघ्र करायें सम्पन्न-राज्यपाल

बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा की सीनेट की बैठक का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते माननीय राज्यपाल (19 मार्च, 2024)

माननीय राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा की सीनेट की बैठक में सभी लंबित परीक्षाओं को यथाशीघ्र सम्पन्न कराने, ससमय प्रोन्नति देने, शिक्षकों एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों को उनकी सेवानिवृत्ति के दिन ही सेवान्त लाभ का भुगतान करने एवं नियमानुसार अनुकंपा के आधार पर शीघ्र नियुक्ति करने का निदेश दिया।

उन्होंने कहा कि छात्र–छात्राओं का नामांकन उनके निकट के ही महाविद्यालयों में होना चाहिए ताकि उन्हें सहूलियत हो। ■

शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के बीच हो मुधर संबंध-राज्यपाल

माननीय राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर की सीनेट की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच मधुर और आत्मीयतापूर्ण संबंध होना चाहिए। शिक्षकों को बच्चों की समस्याओं को समझकर उनका समाधान करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि सीनेट के सदस्य विश्वविद्यालय के उत्कर्ष के लिए पूरे वर्ष सचेष्ट रहें। विश्वविद्यालय में शिक्षा का स्तर बढ़ाने एवं बिहार में शैक्षणिक वातावरण को बेहतर बनाने के लिए संकीर्ण भावनाओं से उपर उठकर सामूहिक रूप से प्रयत्न करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय की प्रगति होने पर बिहार और देश का विकास होगा। ■

टी.एम.बी.वि.वि., भागलपुर की सीनेट की बैठक को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (21 मार्च, 2024)

मणिपुर, मेघालय एवं त्रिपुरा दिवस
देश के सभी राज्यों की अपनी-अपनी विशेषताएँ-राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 21 जनवरी, 2024 को राजभवन, बिहार के दरबार हॉल में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के तहत आयोजित मणिपुर, मेघालय एवं त्रिपुरा के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भारत के सभी राज्यों में अन्य प्रदेशों के लोग रहते हैं। हम एक–दूसरे के साथ अपने विचारों और संस्कृति से जुड़े हुए हैं, अतःकरण से हम एक हैं। उन्होंने कहा कि बिहार ज्ञान की भूमि है और यहाँ की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत अत्यन्त समृद्ध है। इसी प्रकार देश के अन्य सभी राज्यों की भी अपनी–अपनी विशेषताएँ हैं, परन्तु सब की पहचान भारत की विशेषता के रूप में है। हमारी भाषा, वेश–भूषा, रहन–सहन, खान–पान इत्यादि भले ही भिन्न हैं, लेकिन सांस्कृतिक और भावनात्मक रूप से हम सभी एक हैं और हमारा देश एक है। हमारी एकता का विचार हमारे हृदय में है। पूरा भारत एक है और हमें इस एकता को बनाए रखने की आवश्यकता है।

अतिथियों को संबोधित करते हुए माननीय राज्यपाल (21 जनवरी, 2024)

उत्तर प्रदेश दिवस
अलग-अलग संस्कृति के बावजूद हम सब एक-राज्यपाल

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते माननीय राज्यपाल (24 जनवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 24 जनवरी, 2024 को राजभवन, बिहार के राजेन्द्र मंडप में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के तहत आयोजित उत्तर प्रदेश के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश एक बड़ा और महत्वपूर्ण प्रदेश है। बिहार और उत्तर प्रदेश की संस्कृति, खान–पान और बोलचाल में अनेक समानताएँ हैं। भले ही बोलचाल में इस्तेमाल किये जानेवाले शब्द अलग हो, लेकिन उनका भाव (Spirit) एक ही होता है।

उन्होंने कहा कि भारत के विभिन्न राज्यों की संस्कृति भले ही अलग–अलग हो, परन्तु हम सब एक हैं। इस भावना को अधोरेखित करने की आवश्यकता है। सभी राज्य के लोग अपनी भाषा, संस्कृति आदि को बनाये रखें परंतु वे जिस राज्य में रहें, वहीं का होकर रहें। इसी में हमारी एकता है। उन्होंने कहा कि बिहार के विकास में सभी लोगों का योगदान है, चाहे वे किसी भी राज्य से आकर यहाँ रह रहे हों।

मिजोरम एवं अरूणाचल प्रदेश दिवस
सभी भारतवासी आपस में एक-राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 20 फरवरी, 2024 को राजभवन के दरबार हॉल में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के तहत मिजोरम एवं अरूणाचल प्रदेश के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भारत के विभिन्न राज्यों की संस्कृति भले ही अलग–अलग हो, परन्तु हम सब एक हैं। किसी भी राज्य के लोग चाहे जिस राज्य में भी रहें, वहीं का होकर रहें। इसी में हमारी एकता है। हम चाहे जहाँ भी रहते हों, हम भारतीय हैं। बिहार के विकास में सभी लोगों का योगदान है, चाहे वे किसी भी राज्य से आकर यहाँ रह रहे हों। राज्यपाल ने कहा कि हम सभी भारतवासी आपस में एक–दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं और इस एकता के सूत्र के कारण ही भारत के किसी एक राज्य के लोगों को तकलीफ होने अथवा उनपर विपत्ति आने पर दूसरे दूरस्थ राज्यों के लोगों को पीड़ा होती है। यह हमारे देशवासियों का एक–दूसरे के प्रति प्रेम और अपनापन की भावना तथा आपसी एकता का प्रतीक है जिसे बनाए रखने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम में अतिथियों को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (20 फरवरी, 2024)

बिहार दिवस

बिहारी दूसरों की मदद के लिए हमेशा रहते हैं तैयार-राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 22 मार्च, 2024 को बिहार दिवस के अवसर पर राजभवन के राजेन्द्र मंडप में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार के लोग मेधावी और कार्यकुशल हैं। वे पूरी दुनिया में अपनी क्षमता के लिए जाने जाते हैं। वे मिलनसार हैं तथा दूसरों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

उन्होंने कहा कि बिहार के लोग देश और दुनिया के हर क्षेत्र में रहते हैं। उन्हें बिहार के दूत के रूप में इस राज्य की सकारात्मक छवि बाहर के लोगों के सामने रखना चाहिए। बिहार के प्रत्येक व्यक्ति की विशेषताएँ बिहार की विशेषताएँ हैं। हमें बिहार दिवस के पावन अवसर पर इस राज्य की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत को ध्यान में रखते हुए वर्तमान को सँवारकर सुनहरे भविष्य की मजबूत नींव रखने का संकल्प लेना चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि भारत जब एक होता है, तब यह श्रेष्ठ होता है। हम सभी भारतवासी एक हैं। भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति की अनेक छटाएँ हैं परन्तु हमारी संस्कृति एक है, हम एक हैं, हमारा विचार एक है और हमारा देश एक है। ■

माननीय राज्यपाल ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का किया उद्घाटन (22 मार्च, 2024)

राजस्थान दिवस

राजस्थान के लोगों ने बनाई है विशिष्ट पहचान-राज्यपाल

प्रतिभागियों के साथ माननीय राज्यपाल (30 मार्च, 2024)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 30 मार्च, 2024 को राजभवन, बिहार के राजेन्द्र मंडप में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के तहत आयोजित राजस्थान के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राजस्थान के लोग जहाँ भी रह रहे हैं, वहाँ उन्होंने विशिष्ट पहचान बनाई है तथा औद्योगिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों में उनका महत्वपूर्ण योगदान है।

राज्यपाल ने कहा कि राजस्थान भारत का एक महत्वपूर्ण राज्य है। वहाँ के लोग काफी सहृदय और मिलनसार हैं। राजस्थानी व्यंजन की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि वे तन और मन, दोनों को ही तृप्ति प्रदान करते हैं।

उन्होंने कहा कि राजस्थान के लोग भारत के सभी प्रदेशों में रह रहे हैं और वे वहाँ के सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवेश में पूरी तरह रच–बस गये हैं। बिहार के लोगों की आत्मीयता और प्रेम के कारण ही इस राज्य में वे बिहारी बनकर रह रहे हैं। उन्होंने बिहार की भाषा और संस्कृति को अपनाते हुए इस राज्य के साथ अपनापन के भाव को सँजोया है। बिहार के आर्थिक विकास सहित विभिन्न क्षेत्रों में वे अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। ■

युवा संगम फेज-4

राज्यपाल ने तेलंगाना के छात्र-छात्राओं के साथ किया संवाद

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत युवा संगम फेज–4' कार्यक्रम के तहत 20 मार्च, 2024 को तेलंगाना के छात्र–छात्राओं से राजभवन के दरबार हॉल में संवाद किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि बिहार की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत अत्यन्त समृद्ध है। प्राचीनकाल में बिहार शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। विश्व के दो प्राचीन विश्वविद्यालय– नालंदा विश्वविद्यालय एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय बिहार में ही अवस्थित थे। बोधगया में भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई। यह राज्य माता सीता, भगवान महावीर, चाणक्य, आर्यभट्ट, गुरू गोबिन्द सिंह जैसे मनीषियों की जन्मभूमि रही है। शंकराचार्य ने बिहार के महिषी में मंडन मिश्र के साथ शास्त्रार्थ किया था। भगवान राम भी यहाँ आये थे। मंदार पर्वत भी यहीं अवस्थित है। बिहार की भूमि काफी उपजाऊ है।

राज्यपाल ने कहा कि बिहार में आने के बाद यहाँ के बारे में अन्य राज्य के लोगों की धारणा सकारात्मक हो जाती है। इस राज्य के लोग काफी अच्छे, व्यवहार कुशल, दूसरों का सम्मान करनेवाले और परिश्रमी हैं। ■

तेलंगाना के छात्र-छात्राओं के साथ संवाद करते माननीय राज्यपाल (20 मार्च, 2024)

नई सरकार का गठन

मुख्यमंत्री एवं अन्य मंत्रियों का शपथ ग्रहण समारोह (28 जनवरी, 2024)

बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते श्री नीतीश कुमार (28 जनवरी, 2024)

श्री विजय कुमार सिन्हा को मंत्री पद की शपथ दिलाते माननीय राज्यपाल (28 जनवरी, 2024)

श्री सम्राट चौधरी को मंत्री पद की शपथ दिलाते माननीय राज्यपाल (28 जनवरी, 2024)

मंत्री पद की शपथ लेते श्री विजय कुमार चौधरी (28 जनवरी, 2024)

मंत्री पद की शपथ लेते डॉ प्रेम कुमार (28 जनवरी, 2024)

मंत्री पद की शपथ लेते श्री बिजेन्द्र प्रसाद यादव (28 जनवरी, 2024)

मंत्री पद की शपथ लेते श्री श्रवण कुमार (28 जनवरी, 2024)

मंत्री पद की शपथ लेते श्री सुमित कुमार सिंह (28 जनवरी, 2024)

मंत्री पद की शपथ लेते श्री संतोष कुमार सुमन (28 जनवरी, 2024)

राज्यपाल ने विस्तारित मंत्रिपरिषद् के सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई (15 मार्च, 2024)

श्री नीरज कुमार सिंह

श्री मंगल पाण्डेय

श्रीमती रेणु देवी

श्रीमती लेसी सिंह

श्री मदन सहनी

श्री नितिन नवीन

डॉ. दिलीप कुमार जायसवाल

श्री नीतीश मिश्रा

श्री महेश्वर हजारी

श्री केदार प्रसाद गुप्ता

श्री रत्नेश सदा

श्री संतोष कुमार सिंह

श्री सुरेन्द्र मेहता

श्री कृष्णनंदन पासवान

मो. जमा खान

श्री जयंत राज

श्री हरि सहनी

श्री सुनील कुमार

श्री जनक राम

श्रीमती शीला कुमारी

माननीय राज्यपाल ने बिहार विद्युत विनियामक आयोग के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री आमिर सुबहानी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलायी (11 मार्च, 2024)

गणतंत्र दिवस के अवसर पर माननीय राज्यपाल ने बिहारवासियों को संबोधित किया (26 जनवरी, 2024)

गणतंत्र दिवस पर परेड की सलामी लेते हुए माननीय राज्यपाल (26 जनवरी, 2024)

बिहार विधानमंडल के दोनों सदनों के संयुक्त अधिवेशन को संबोधित करते हुए माननीय राज्यपाल (12 फरवरी, 2024)

वसंत पंचमी के अवसर पर राजभवन के राजेन्द्र मंडप में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम 'वसंत रंगोत्सव' में कलाकारों के साथ मा. राज्यपाल (14 फरवरी, 2024)

राजभवन के राजेन्द्र मंडप में आयोजित 'भारतीय ज्ञान परंपरा' विषयक व्याख्यान कार्यक्रम का उद्घाटन करते माननीय राज्यपाल (14 फरवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल ने खाजपुरा, पटना स्थित शिव मंदिर के निकट महाशिवरात्रि शोभा यात्रा के अभिनन्दन महोत्सव में भाग लिया (14 फरवरी, 2024)

पटना जिला प्रशासन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'राजकीय समारोह' का विमोचन करते माननीय राज्यपाल, मुख्यमंत्री व अन्य (24 जनवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल ने बंगलुरु में गोवा विधान सभा के पूर्व सचिव श्री टी०एन० ध्रुव कुमार द्वारा लिखित पुस्तक 'The Bubbles of Memory' का विमोचन किया ।(05 जनवरी, 2024)

भारतरत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर

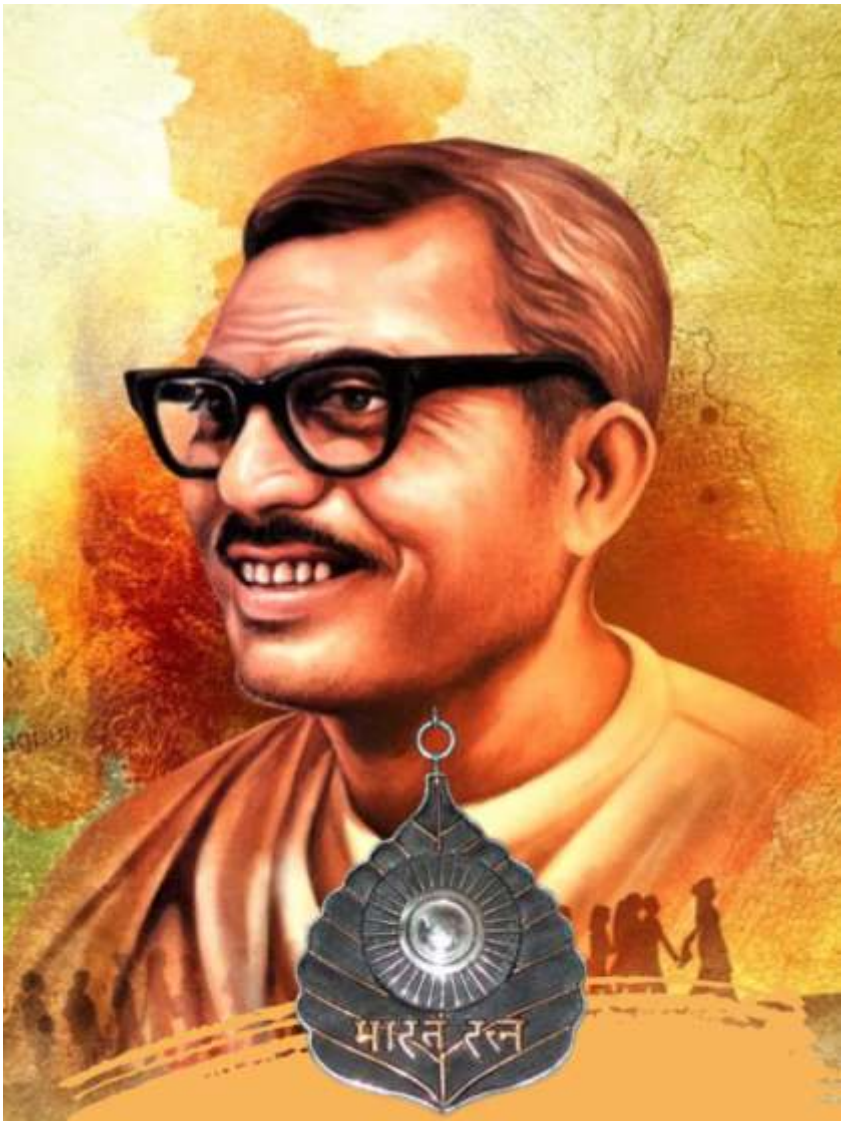

हाल ही में सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारतरत्न' से सम्मानित कर्पूरी ठाकुर को जननायक कहकर संबोधित किया जाता है। दो बार बिहार के मुख्यमंत्री रहे कर्पूरी ठाकुर का जन्म 24 जनवरी, 1924 को बिहार के समस्तीपुर जिला के पितौंझिया (अब कर्पूरीग्राम) निवासी गोकुल ठाकुर और रामदुलारी के घर हुआ था। सीमांत किसान पिता गोकुल नाई का काम करते थे। कर्पूरी ठाकुर ने भारत छोड़ो आंदोलन के समय करीब 26 महीने जेल में बिताया था। 22 दिसंबर, 1970 से 2 जून, 1971 और 24 जून, 1977 से 21 अप्रैल, 1979 के दौरान, दो कार्यकाल में वे बिहार के मुख्यमंत्री रहे। बाद में बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष भी रहे। वह साल 1952 में पहली बार विधायक चुने जाने के बाद आजीवन किसी न किसी सदन के सदस्य रहे। अपने जीवनकाल में कई अहम पदों पर रहने बावजूद उनके पास न तो घर था और ना ही कोई गाड़ी। यहां तक कि उनके पास अपनी पैतृक जमीन भी नहीं थी।

कर्पूरी जी की सादगी और ईमानदारी के किस्से सुन कर आज भी लोग हैरत में आ जाते हैं। जब 1952 में कर्पूरी ठाकुर पहली बार विधायक बने, उन्हीं दिनों ऑस्ट्रिया जाने वाले एक प्रतिनिधिमंडल में उनका चयन हुआ था, लेकिन उनके पास पहनने को कोट नहीं था। एक दोस्त से कोट मांगा तो वह भी फटा हुआ मिला। कर्पूरी वही कोट पहनकर चले गए। वहां यूगोस्लाविया के प्रमुख मार्शल टीटो ने जब फटा कोट देखा तो उन्हें नया कोट गिफ्ट किया

दरअसल, राजनीति में ईमानदारी, सज्जनता एवं लोकप्रियता ने ही कर्पूरी ठाकुर को जननायक बना दिया था। कर्पूरी जी का निधन 64 वर्ष की उम्र में 17 फरवरी, 1988 को हुआ था। कर्पूरी जी ने आजीवन कांग्रेस के विरुद्ध राजनीति की थी। आपातकाल के दौरान इंदिरा गांधी उन्हें गिरफ्तार करने में कामयाब नहीं हो पाईं। कर्पूरी सर्वोच्च पद पर पिछड़े समाज के व्यक्ति को देखना चाहते थे। कर्पूरी राजनीति में परिवारवाद के प्रबल विरोधी थे। जीवित रहने तक उन्होंने अपने परिवार के किसी सदस्य को राजनीति में नहीं आने दिया।

समाजवादी नेता एवं बिहार के पूर्व

मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर को उनके जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर केंद्र की मोदी सरकार द्वारा देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न देने की चहुंओर सराहना हुई है।

अपने तत्कालीन दौर के समाज की चर्चा करते हुए कभी कर्पूरी ठाकुर ने कहा था–'मैंने फर्स्ट डिविजन से मैट्रिक पास किया, तब गांव में सिर्फ पांच बच्चे ही मैट्रिक पास कर पाए थे। तब बाबूजी नाई का काम कर रहे थे। वे गांव के एक संपन्न आदमी के पास मुझे लेकर गए और कहा कि सरकार! ये मेरा बेटा है, फर्स्ट डिवीजन से मैट्रिक पास किया है। उस आदमी ने अपनी टांगें टेबल के ऊपर रखते हुए कहा, 'अच्छा, फर्स्ट डिवीजन से पास किए हो? मेरा पैर दबाओ।'...यह किस्सा बिहार के पूर्व सीएम कर्पूरी ठाकुर ने अपने प्रमुख सचिव यशवंत सिन्हा को सुनाया था।

उनकी सादगी और ईमानदारी के किस्से सुन कर आज भी लोग हैरत में आ जाते हैं। जब 1952 में कर्पूरी ठाकुर पहली बार विधायक बने, उन्हीं दिनों ऑस्ट्रिया जाने वाले एक प्रतिनिधिमंडल में उनका चयन हुआ था, लेकिन उनके पास पहनने को कोट नहीं था। एक दोस्त से कोट मांगा तो वह भी फटा हुआ मिला। कर्पूरी वही कोट पहनकर चले गए। वहां यूगोस्लाविया के प्रमुख मार्शल टीटो ने जब फटा कोट देखा तो उन्हें नया कोट गिफ्ट किया।

80 के दशक में एक बार बिहार विधान सभा की बैठक चल रही थी, तब कर्पूरी ठाकुर विधान सभा में प्रतिपक्ष के नेता थे। उन्हें लंच के लिए आवास जाना था। उन्होंने कागज पर लिखवा कर अपने ही दल के एक विधायक से थोड़ी देर के लिए उनकी जीप मांगी। विधायक ने उसी कागज पर लिख दिया, "मेरी जीप में तेल नहीं है। आप दो बार मुख्यमंत्री रहे, कार क्यों नहीं खरीदते?" यह सच्चाई है कि दो बार मुख्यमंत्री और एक बार उप–मुख्यमंत्री रहने के बावजूद उनके पास अपनी गाड़ी नहीं थी। वे रिक्शे से चलते थे। कभी किसी मित्र ने कार खरीदने के लिए कहा तो बेबाकी से उन्होंने कहा–'कार खरीदने और पेट्रोल खर्च वहन करने लायक मेरी आय नहीं है।'

साल था 1974, कर्पूरी ठाकुर के छोटे बेटे का मेडिकल की पढ़ाई के लिए चयन हुआ, पर वे बीमार पड़ गए। दिल्ली के राममनोहर लोहिया अस्पताल में भर्ती हुए। हार्ट की सर्जरी होनी थी। इंदिरा गांधी को मालूम हुआ तो एक राज्यसभा सांसद को भेजकर एम्स में भर्ती कराया। खुद मिलने भी गईं और सरकारी खर्च पर इलाज के लिए अमेरिका भेजने की पेशकश की। कर्पूरी ठाकुर को मालूम हुआ तो बोले, "मर जाएंगे, लेकिन बेटे का इलाज सरकारी खर्च पर नहीं कराएंगे।" बाद में जयप्रकाश नारायण ने कुछ व्यवस्था कर न्यूजीलैंड भेजकर उनके बेटे का इलाज कराया था।

वर्ष 1977 के एक किस्से के बारे में कभी कर्पूरी जी के निजी सहायक रहे पद्मश्री से सम्मानित वरिष्ठ पत्रकार सुरेंद्र किशोर ने अपने फेसबुक वॉल पर लिखा था – पटना के कदम कुआं स्थित चरखा समिति भवन में जयप्रकाश नारायण का जन्मदिन मनाया जा रहा था। पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर, नानाजी देशमुख समेत देशभर से नेता जुटे थे। मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुरी फटा कुर्ता, टूटी चप्पल पहन कर पहुंचे। एक नेता ने टिप्पणी की, 'किसी मुख्यमंत्री के ठीक ढंग से गुजारे के लिए कितना वेतन मिलना चाहिए?' सब हंसने लगे। चंद्रशेखर जी अपनी सीट से उठे और अपने कुर्ते को सामने की ओर फैला कर कहने लगे, कर्पूरी जी के कुर्ता फंड में दान कीजिए। सैकड़ों रुपये जमा हुए। उसे कर्पूरी जी को थमाकर उन्होंने कहा कि इससे अपना कुर्ता–धोती ही खरीदिएगा तो कर्पूरी जी ने कहा, "इसे मैं मुख्यमंत्री राहत कोष में जमा करा दूंगा।"

कर्पूरी ठाकुर दो बार बिहार के मुख्यमंत्री रहे, लेकिन अपना एक ढंग का घर तक नहीं बनवा पाए थे। एक बार प्रधानमंत्री रहते चौधरी चरण सिंह उनके घर गए तो दरवाजा इतना छोटा था कि उन्हें सिर में चोट लग गई। वेस्ट यूपी वाली खांटी शैली में उन्होंने कहा, "कर्पूरी, इसको जरा ऊंचा करवाओ।" कर्पूरी ने कहा, "जब तक बिहार के गरीबों का घर नहीं बन जाता, मेरा घर बन जाने से क्या होगा?"

70 के दशक में जब पटना में विधायकों और पूर्व विधायकों को निजी आवास के लिए सरकार सस्ती दर पर जमीन दे रही थी, तो विधायकों के कहने पर भी कर्पूरी ठाकुर ने जमीन लेने से साफ मना कर दिया था। एक विधायक ने कहा– जमीन ले लीजिए, आप नहीं रहिएगा तो आपके बच्चे ही रहेंगे। कर्पूरी ठाकुर ने कहा कि वे सब अपने गांव में रहेंगे।

उनके निधन के बाद हेमवंती नंदन बहुगुणा जब उनके गांव गए, तो उनकी पुश्तैनी झोपड़ी देख कर रो पड़े थे। उन्हें आश्चर्य हुआ कि 1952 से लगातार विधायक रहे स्वतंत्रता सेनानी कर्पूरी ठाकुर दो बार मुख्यमंत्री बनें, लेकिन अपने लिए उन्होंने कहीं एक मकान तक नहीं बनवाया। दरअसल कर्पूरी ठाकुर का पूरा जीवन संघर्ष में गुजरा। कबीर की सादगी और साफगोई ही उनके जीवन का मूलमंत्र रहा।

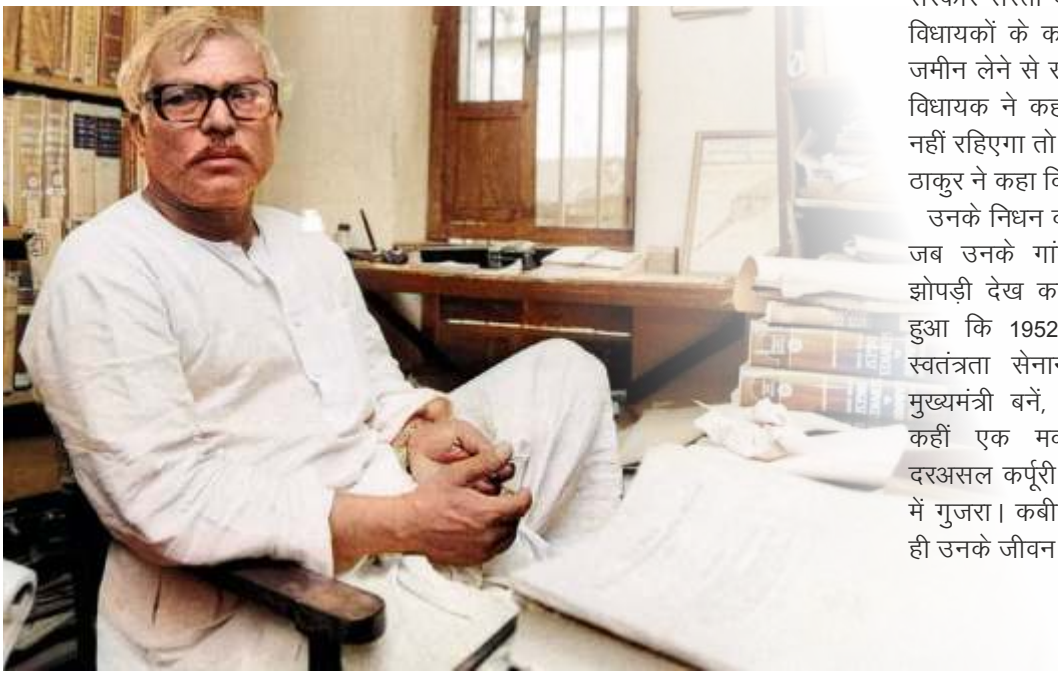

माननीय राज्यपाल से कुलपतियों ने मुलाकात की (09 जनवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल से उत्तराखंड के माननीय राज्यपाल ने राजभवन, बिहार में मुलाकात की (11 जनवरी, 2024)

माननीय मुख्यमंत्री ने माननीय राज्यपाल से मुलाकात की (23 जनवरी, 2024)

माननीय विधान सभा अध्यक्ष ने माननीय राज्यपाल से शिष्टाचार भेंट की (16 फरवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल से राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय के अध्ययन दल ने मुलाकात की (06 फरवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल ने राजभवन, उत्तर प्रदेश में वहाँ की माननीय राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल से मुलाकात की (18 फरवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल से भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. पी. नड्डा ने राजभवन आकर शिष्टाचार मुलाकात की (28 जनवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल से श्री अनीश विशांत किशॉन, हेड ऑफ इंडिया द हेग, नीदरलैंड एवं तीन अन्य लोगों ने राजभवन पहुँचकर शिष्टाचार मुलाकात की। वे बिहार के मूल निवासी हैं (09 मार्च, 2024)

माननीय राज्यपाल ने लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से अयोध्या में श्री राम लला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह को देखा (22 जनवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल ने अयोध्या में श्रीराम लला के विराजमान होने पर श्री श्री रामनवमी शोभा यात्रा अभिनंदन समिति द्वारा पटना के डाकबंगला चौराहा पर आयोजित दीपोत्सव एवं भजन संध्या कार्यक्रम में भाग लिया। (22 जनवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के गया अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा पहुंचने पर वहां उनका स्वागत किया (02 मार्च, 2024)

माननीय राज्यपाल ने बेतिया में आयोजित 12,800 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 'शिलान्यास, उद्घाटन और राष्ट्र को समर्पण' कार्यक्रम में भाग लिया (06 मार्च, 2024)

जयंती/पुण्यतिथि

स्वर्गीय कैलाशपति मिश्र की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए माननीय राज्यपाल (09 मार्च, 2024)

माननीय राज्यपाल ने डॉ. राजेंद्र प्रसाद को उनकी पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की (28 फरवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती के अवसर पर उन्हें नमन किया (23 जनवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल ने जननायक कर्पूरी ठाकुर की जयंती के अवसर पर उन्हें नमन किया (24 जनवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल ने स्वर्गीय भूपेन्द्र नारायण मंडल को उनकी जयंती के अवसर पर नमन किया (01 फरवरी, 2024)

मंदार की मथनी से हुआ था समुद्र मंथन

बिहार के बांका जिला अंतर्गत बौंसी में मंदार पर्वत है। इस क्षेत्र में लखदीपा मंदिर, कामधेनु मंदिर, पाहपरणी सरोवर, लक्ष्मी नारायण मंदिर, मधुसूदन मंदिर, सहित कई धार्मिक स्थल हैं। मंदार पर्वत के चारों तरफ सर्प का चिह्न है। मान्यता है कि इसी पर्वत को मथनी बनाकर समुद्र मंथन हुआ था जिससे 14 रत्नों की प्राप्ति हुई थी।

बिहार के बांका जिला मुख्यालय से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर मंदार पहाड़ अवस्थित है। इसे तीन धर्मों का संगम स्थल भी कहा जाता है। ऐतिहासिक मंदार पर्वत पर पुरातात्विक अवशेषों का विपुल भंडार है। पर्वत की तराई से लेकर शिखर तक मंदिर के अवशेष हैं जिससे यह प्रमाणित होता है कि एक समय में यहां सैकड़ों मंदिर हुआ करते थे।

मंदार की चर्चा कई ग्रंथों एवं काव्यों में मिलती है। यहां जनवरी माह में सफा, सनातन एवं जैन समुदायों के धर्मावलंबियों का जमघट लगता है। सफा धर्म के संस्थापक चंदर बाबा के आदर्शों की पूजा सफा धर्म के लोग मंदार पर आकर करते हैं। इस क्रम में बिहार, झारखंड एवं बंगाल सहित अन्य प्रांतों के लोग यहां पहुंचते हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार इसी मंदार पर्वत से समुद्र का मंथन किया गया था। वासुकि नाग की मथानी बनाई गई थी। पर्वत पर इसके चिह्न अभी भी मौजूद हैं। पूर्व काल में मंदिर के आसपास सैकड़ों तालाब हुआ करते थे। आज भी कई तालाब यहां मौजूद हैं। पूर्व काल में इस स्थान को बालिसानगर कहा जाता था। अभी इस स्थान को बौंसी के नाम से जाना जाता है। मंदार का शिखर 800 फीट ऊंचा है।

मंदार पर्वत पर सालों भर देशभर के पर्यटक घूमने के लिए आते रहते हैं। विशेष रूप से 14 जनवरी मकर संक्रांति के अवसर पर यहां चार दिवसीय विशाल मेला का आयोजन होता है। जानकार बताते हैं कि मंदार के सानिध्य में कई बड़े सिद्धों व

योगियों ने अपना समय व्यतीत किया है। आज भी यहां ध्यान साधना के लिए साधक आते हैं।

काशी विश्वनाथ मंदिर

मंदार पर्वत शिखर पर भगवान काशी विश्वनाथ का मंदिर है। इसके अलावा जैन समुदाय के भी मंदिर हैं। पर्वत पर सीताकुंड, शंखकुंड, आकाशगंगा, भगवान नरसिंह की गुफा, सुखदेव मुनि की गुफा, राम झरोखा (वर्तमान में तपस्थली), मधु कैटभ की पत्थर की आकृति आदि समेत आस्था से जुड़े कई अन्य स्थल मौजूद हैं। पर्वत की तराई में सीता कुंड है। यहां मकर संक्रांति के अवसर पर हर वर्ष विभिन्न राज्यों से हजारों श्रद्धालु स्नान करने के लिए एकत्रित होते हैं। किंवदंतियों के अनुसार यहां माता सीता आई थीं।

लखदीपा मंदिर

पर्वत की तराई के पूरब जंगल में लखदीपा मंदिर स्थित है। यहां कभी लाखों दीपक जला करते थे। मंदिर के भग्नावशेष आज भी मौजूद हैं। दीपावली में आज भी लोग श्रद्धापूर्वक दीये जलाने के लिए यहां पहुंचते हैं।

कहा जाता है कि यह विश्व का इकलौता लखदीपा मंदिर है। ऐसी मान्यता है कि यहां पर सातवीं सदी से आठवीं सदी के बीच भव्य मंदिर हुआ करता था। यहां दीप जलाने के लिए एक लाख ताखा हुआ करते थे। इसमें मंदार क्षेत्र के आसपास के श्रद्धालु दीपावली में पहुंचकर एक लाख से अधिक दीपक जलाया करते थे। वर्तमान में भी ताखों के अवशेष बचे हुए हैं। समय के साथ–साथ लखदीपा मंदिर का वर्तमान में एक छोटा सा अवशेष बचा हुआ है। यह मंदिर अभी भी अपनी भव्यता का गवाही दे रहा है।

भगवान मधुसूदन मंदिर

लखदीपा मंदिर के ऊपर भगवान मधुसूदन का मंदिर अवस्थित था। पाल वंश के पहले शासक धर्मपाल ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था। बाद में काला पहाड़ नामक आक्रमणकारियों ने इस मंदिर को ध्वस्त कर दिया। भगवान मधुसूदन की प्रतिमा दूसरी जगह स्थापित की गई। मान्यता है कि वध करने के दौरान दैत्य मधु ने भगवान से उसे इसी जगह पर स्थापित करने की प्रार्थना की थी।

अवंतिका नाथ मंदिर

लखदीपा मंदिर के ठीक सामने अवंतिका नाथ मंदिर है। यहां भगवान मधुसूदन वर्ष में एक बार मंदार भ्रमण के लिए निकलते हैं। मंदार पर्वत के पूरब में कामधेनु मंदिर है। विश्व के इस इकलौते मंदिर में पत्थर के बछड़े व गाय की मूर्ति हैं। बताया जाता है कि यह आपरूपी है जो सदियों से लोगों के आस्था का केंद्र बना हुआ है।

लक्ष्मी नारायण मंदिर

पापहरणी तालाब के मध्य स्थित लक्ष्मी नारायण मंदिर भी श्रद्धालुओं के आस्था का केंद्र है। यहां मंदार आनेवाले श्रद्धालु पूजा अर्चना करते हैं। इस मंदिर का निर्माण पापहरणी सरोवर के बीच हुआ है।

वेदविद्यापीठ गुरुधाम

बौंसी इलाके में वेदविद्यापीठ गुरुधाम भी है। यह स्थान मंदार पर्वत से पांच किलोमीटर की दूरी पर है। यहां सस्कृत, वेद सहित कर्मकांड व धार्मिक अनुष्ठान की पढ़ाई होती है। यहां संस्कृत महाविद्यालय भी है। यहां काफी संख्या में ब्रह्मचारी वेद अध्ययन करते हैं। सरस्वती पूजा और गुरु पूर्णिमा पर यहां पांच दिवसीय समारोह होता है।

■

मलाई की मिठाई खुरचन
मखमली स्वाद

पाटलिपुत्र की प्राचीन नगरी पटना सिटी की पहचान खान–पान के कई अन्य स्वादों के साथ खुरचन जैसी अनोखी मिठाई से भी है। इस मिठाई का इतिहास जितना पुराना है, इसके स्वाद के भी उतने ही किस्से हैं। शुद्ध दूध की बनी खुरचन मलाई की कई परतें जमने के बाद मखमली सी दिखती है। दूध को एक–एक पाव की मात्रा में लोहे की कड़ाहियों में सूखने तक पकाया जाता है तथा इसके ठंडा हो जाने के बाद बारीकी से इसकी मलाई पत्तरनुमा चाकू से उतारी जाती है और उसे थाली में फैलाया जाता है। इसके बाद पिसी हुई शक्कर छिड़ककर एक के ऊपर एक मलाई की परतें डाल कर खुरचन मिठाई तैयार की जाती है। शुद्ध दूध की मलाई से बनी इस मिठाई को जो भी एक बार चख ले वह इसके मखमली स्वाद को कभी भूला नहीं सकेगा।

दूध से तैयार होने वाली इस भारतीय मिठाई का इतिहास 100 साल से अधिक पुराना है। जायके के दीवानों को अलग–अलग स्वाद की तलाश रहती है। इसके लिए वे कहीं भी जा सकते हैं। स्वाद तो ऐसी चीज है जो किसी स्थान को प्रसिद्ध बना देती है, जैसे – सिलाव का खाजा, गया की तिलकुट, शीतलपुर का रसगुल्ला, भोजपुर की बेलग्रामी आदि। ऐसे ही अपने विशिष्ट स्वाद के कारण जानी जाती है पटना सिटी की खुरचन मिठाई।

हालांकि इस मिठाई पर किसी एक जगह का एकाधिकार नहीं है। बिहार के पटना सिटी को खुरचन के लिए ख्याति जरूर मिली है, मगर यह मिठाई अन्य प्रदेशों में भी थोड़े बदले रूप और स्वाद में मिलती है।

पटना सिटी के हलवाई रामाशंकर का मानना है कि खुरचन की शुरुआत करीब सौ वर्ष पहले हुई थी। ऐसा कहा जाता है कि पटना सिटी और आसपास के इलाके में दूध की मात्रा काफी होती थी, जिसके कारण उन्होंने दूध की ही अलग सी मिठाई बनाने के बारे में सोचा। वैसे तो बहुत से तरीकों से दूध की मिठाइयां बनती हैं लेकिन खुरचन तैयार होती है दूध की शुद्ध मलाई से। इसे दूध की मलाई को लोहे की गर्म कड़ाही में सुखाकर परतों में तैयार किया जाता है। रामाशंकर के अनुसार इस मिठाई के एक टुकड़े में सुखी मलाई की 25 से 30 परतें होती हैं। चीनी की अल्पमात्रा की वजह से इस मिठाई में दूध की प्राकृतिक मिठास उभर कर आती है। सौंधी सुगंध और मुलायम स्वाद के कारण यह मिठाई धीरे–धीरे लोकप्रिय हो गई और लोग इसकी तरफ आकर्षित होने लगे।

बैजू हलवाई बताते हैं कि काफी पहले दूध की छाली से एक नई मिठाई तैयार की गई थी। छाली की कई परतों को एक–दूसरे के ऊपर जमाकर मिठाई तैयार की गई और इसका स्वाद लाजवाब था। बाद में इसे बनाने की विधि में थोड़ा परिवर्तन किया गया और इसे नाम दिया गया खुरचन। धीरे–धीरे पटना सिटी की खुरचन मशहूर होने लगी। कड़ाही में खुरचन का दूध उबालते और सुखाते समय बहुत कम चीनी डाली जाती है, इसी वजह से इसका स्वाद हल्की मीठी और मखमली होती है। आजकल सुगर फ्री खुरचन भी तैयार होने लगी है।

पटना सिटी की करीब 20 दुकानों पर खुरचन बनाई जाती है। सामान्य दिनों में एक दुकान पर करीब 20 से 30 किग्रा खुरचन की बिक्री हो जाती है, वहीं विशेष अवसरों और त्योहार के दिनों में इसकी मांग बढ़ जाती है। जैसे–जैसे इसकी प्रसिद्धि फैल रही है, प्रदेश के अन्य हिस्सों व दूसरे राज्यों से भी इसकी मांग हो रही है। राजधानी पटना की भी कई मिठाई की दुकानें खुरचन की लोकप्रियता को देखते हुए पटना सिटी से ऑर्डर देकर खुरचन बनवाते और अपने यहां से बेचते हैं। ■

सदा आनंद रहे एही द्वारे

सदा आनंद रहे एही द्वारे
अरे मोहन खेले होरी हो.....
एक ओरी खेले कुंवर कन्हाई
आ एक ओरी राधा गोरी हो
सदा आनंद रहे एही द्वारे
मोहन खेले होरी हो.....

बिहारी फाग का यह एक उत्कृष्ट नमूना है। सदा आनंद रहे एही द्वारे...के जरिए सर्वमंगल की कामना की जाती है। दरअसल, फागुन (फाल्गुन) की धमक के साथ ही बिहार में चहुंओर फाग की सौंधी थाप सुनाई देने लगती है। सिर्फ होली के दिन ही यहां फगुआ नहीं गाया जाता है बल्कि होली के करीब एक महीना पहले से फगुआ गाने का सिलसिला शुरू हो जाता है। वसंत पंचमी यानी सरस्वती पूजा के दिन से ही गांव–कस्बों में फगुआ गीत के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाने लगता है। इस आयोजन में कई गांवों में प्रतियोगिता होती है, जिसका सबसे बढ़िया फगुआ होता है उसे इनाम भी दिया जाता है। इस दौरान गांव के उन लोगों को चुना जाता है जो फगुआ गाते हैं, डफ, ढोल, झाल, मजीरा, हारमोनियम और ढोलक बजाते हैं। उसके बाद फगुआ जो जमता है वह हर किसी को थिरकने पर मजबूर कर देता है। देर रात तक पूरे गांव में ढोल–मजीरे की थापें गुंजती रहती है।

होली के दिन गांव के मंदिर या ठाकुरबाड़ी से फगुआ का गायन शुरू कर टोली गांव के हर दरवाजे पर जाती है जहां उनका स्वागत पकवान और मेवा आदि खिला कर किया जाता हैं। टोली के लोग बाबा हरिहरनाथ सोनपुर में होरी खेले...आज बृज में होली रे रसिया... अखियां लाले लाल, अखियां लाले लाल...मंदिल में उड़े ला अबीर हो.. .जैसे पारम्परिक फगुआ गीत गाते हैं।

इसके साथ ही 'जोगीरा' गाने की भी परम्परा है। जोगीरा सा रा रा रा... के साथ टोलियों के बीच सवाल–जवाब भी होता है। इनमें देश, समाज की तात्कालीक समस्याओं से लेकर सामाजिक विकृतियों व विद्रुपताओं तक पर भी चुटीले प्रहार किए जाते हैं। दरअसल जोगीरा आमतौर पर भारतीय काव्य विधा की अव्यवसायिक रचना है जिसमें हास्य और व्यंग्य का जबरदस्त पुट होता है। जोगीरा की शुरुआत कब हुई, इसका ठीक–ठीक कोई इतिहास नहीं मिलता। फिर भी ऐसा माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति जोगियों की हठ साधना, वैराग्य और उलटबासियों का मजाक उड़ाने से शुरू होकर सामाजिक विद्रूपताओं पर चोट करने तक पहुँचा। ढोलक और मजीरे की तान और ताल पर मूलतः इसे समूह में गाया जाता है।

जोगीरा में प्रश्नोत्तर शैली भी पाई जाती है, जिसके माध्यम से निर्गुण को समझाने के लिए गूढ़ अर्थयुक्त उलटबासियों का सहारा लेने वाले काव्य की प्रतिक्रिया में उन्हें रोजमर्रा की घटनाओं से जोड़कर रचा जाता है। वैसे परंपरागत जोगीरा काम–कुंठा के विरेचन का साधन भी है। इसमें एक तरह से काम अंगों और प्रतीकों का भरमार है। संभ्रांत और प्रभुत्व वर्ग को जोगीरा के बहाने गाली देने और उन पर गुस्सा निकालने का यह निराला तरीका है। यह एक तरह का विरेचन ही है, जिसके बाद गदगद हो, मनुहार करते हुए कह भी दिया जाता है 'बुरा न मानो होली है'।

दरअसल होली रंगों का त्योहार है। फाग, फगुआ, होली, होरी, रंगोत्सव और मदनोत्सव आदि के रूप में इसे मनाने की प्राचीन परम्परा रही है। देश के कमोबेश सभी हिस्सों में रंगों के इस त्योहार को किसी न किसी रूप में धूमधाम से मनाया जाता है। होली सामाजिक सरोकारों के साथ ही आध्यात्मिक चेतना से भी जुड़ा त्योहार है। प्रकृति के रूप–परिवर्तन से भी इस उत्सव को जोड़ कर देखा जाता है।

शीत ऋतु की कंपकपी और पतझड़ की वीरानगी–उदासी के बाद पेड़–पौधे, फूल–लताओं में नई कोपलें निकल आती हैं। सेमल, गुलमोहर और अमलतास के लाल–पीले फूलों के साथ ही खेतों में सरसों के पीले फूलों से सम्पूर्ण वातावरण रंगों से सराबोर हो जाता है। फूलों से श्रृंगार कर प्रकृति नवयौवना की तरह निखर जाती है। प्रकृति के इन निखरे रूपों को भी होरी या फाग गायन के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है। प्रकृति के साथ ही मानवीय रिश्तों में अपनापन और मिठास के लिए भी होली को अनुकूल माना जाता है। इसलिए हंसी–ठिठोली और मजाक के जरिए प्रेमपूर्ण भावनाओं का इस दौरान प्रकटीकरण होता है। एक जोगीरा के माध्यम से इसे अनुभूत किया जा सकता है–

बनवा बीच कोइलिया बोले, पपीहा नदी के तीर
अँगना में भउजइया डोले, जैसे झलके नीर
जोगीरा सा रा रा रा रा.... ।

भारतीय सामाजिक उत्सवों में भगवान को याद करने की भी सुदीर्घ परम्परा रही है। इसीलिए फाग–गायन में बाबा हरिहरनाथ सोनपुर में होली खेलते हैं तो कान्हा ब्रज में और राम अयोध्या में खेलते हैं। फगुआ में हम मस्ती मजाक और चुहल तो करते हैं लेकिन अश्लीलता की इसमें कोई जगह नहीं होती है। जहां तक आनंद मिले वहां तक तो मस्ती–मजाक स्वीकार किया जा सकता है लेकिन'बुरा न मानो होली है' कह कर की जाने वाली अश्लीलता कतई स्वीकार्य नहीं है।

हमारी सांस्कृतिक परंपरा में हर मौसम और हर महीने को उत्साह से मनाने के लिए गीत बने हैं। गीत गाना खुशी का प्रतीक है जो मानव–मन में उत्साह का संचार करता है। होली के समय भी हम फागुन मास के विदा होने और चैत मास के आगमन के स्वागत में फगुआ गा कर अपने मनोभावों को व्यक्त करते हैं। दरअसल, फाग राग का उत्सव है और और होली का मतलब ही होता है एक दूसरे का हो लेना। होली हमारी सामाजिक एकता और समरसता का भी प्रतीक है।

■

बिहारी फाग गायन के दौरान जोगीरा की बानगी इस रूप में भी देखा जाता है–

हिंदुस्तानी सेना का जब आ जाला तैश,
उड़ल हवा में हाफिज वाफिज, पानी माँगे जैश
जोगीरा सा रा रा रा रा..... ।

जब–जब भारत पर मंडराएल पाकिस्तानी बाज
घर में घुस कर ठोंके उनके अभिनंदन जाँबाज
जोगीरा सा रा रा रा रा..... ।

जोगीरा के माध्यम से राजनीति पर भी चुटीले अंदाज में टिप्पणियां की जाती है, जिसे लोग न केवल उत्साह से गाते हैं, बल्कि उसके भावार्थों के जरिए लोकरंजन भी करते हैं। जैसे–

तात्कालिक और सामयिक मुद्दों पर जोगीरा गा कर अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने की भी परम्परा रही है। इस बार की होली में जोगीरा के माध्यम से कहा गया–

अयोध्या में रामलला का मिलल अपन धाम
जोर लगा के बोलऽ भईया जय जय श्री राम
जोगीरा सा रा रा..... ।

होरी गायन में मान–मनुहार, मजाक और छेड़छाड़ का दौर भी चलता है। जोगीरा के माध्यम से बुजुर्गों को लक्षित करते हुए गाया जाता है–

कहहु रंग बा, कहहु भंग, कहहु मचल हुड़दंग
बुढ़वा भी जवान भइल,देख सभन बाड़न दंग
जोगीरा सा रा रा रा रा... ।

चित्रों में राज्यपाल की थाईलैंड यात्रा

थाईलैंड के वाट पो में भगवान बुद्ध के मंदिर में माननीय राज्यपाल (23 फरवरी, 2024)

थाईलैंड में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा माननीय राज्यपाल का स्वागत किया गया (23 फरवरी, 2024)

माननीय राज्यपाल ने थाईलैंड के अयुत्थया शहर का दौरा किया (24 फरवरी, 2024)

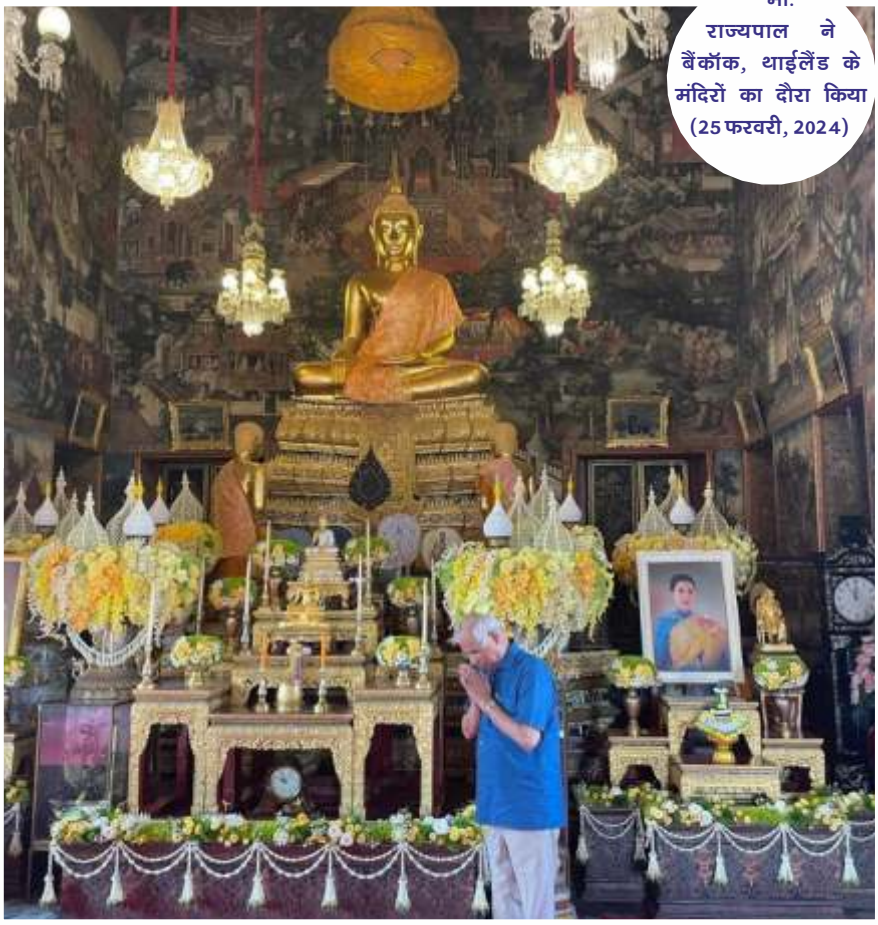

मा. राज्यपाल ने बैंकॉक, थाईलैंड के मंदिरों का दौरा किया (25 फरवरी, 2024)

थाईलैंड में माननीय राज्यपाल एवं प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों का स्वागत किया गया (22 फरवरी, 2024)

बैंकॉक में मंदिरों का अवलोकन करते माननीय राज्यपाल (25 फरवरी, 2024)

राज भवन का
नक्षत्र वन

नक्षत्र वन राज भवन, बिहार के प्रमुख आकर्षणों में से एक है। इस वन में प्रत्येक नक्षत्र से संबंधित वृक्ष को लगाया गया है तथा प्रत्येक राशि को प्रभावित करने वाले नक्षत्रों के विषय में जानकारी भी अंकित है।